स्मारिका

... सभा विवेकानन्द पुरी (पंजी०)

१९८९

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With best compliments from :

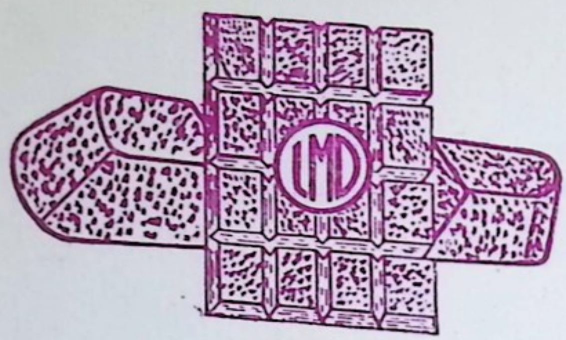

LEAD WALE

Off. : 73 61 61
52 48 13

Res. : 77 25 84
52 11 58

LAKSHMI METAL DEPOT

(LEAD SMELTERS & REFINERS)

Dealers in :

All Kinds of Non-Ferrous Metals

Manufacturers & Stockists of :

- Battery Lead
- Soft Lead
- Lino Metal
- Mono Metal
- Type Metal of Every Specification &
- Other All Kinds of Lead

Office :
3814, Barna Street,
Bara Tooti, Sadar Bazar,
DELHI-110006

Shop
3808, Barna Street,
Bara Tooti, Sadar Bazar,
DELHI-110006

Factory :
Badli Industrial Area,
DELHI

Partner : R. K. GUPTA

श्री अग्रसेन जयन्ती

स्मारिका

सम्वत् २०४६ — सन् १९८९

परामर्शदात्री समिति

ब्रज भूषण गुप्त (संयोजक)

- रामेश्वर दयाल गर्ग
- कपूर चन्द गोयल
- मुसद्दी लाल
- माया प्रकाश गुप्ता
- प्रहलाद राय गर्ग

सम्पादक :
मांगे लाल रुस्तगी

अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी (पंजी०)

190, विवेकानन्द पुरी, आजाद मार्ग, दिल्ली-110007

सन्देश

D/o No. 975/89 dt. 29.8.89
वनारसी दास गुप्त
उप मुख्य मन्त्री,
हरियाणा, चण्डीगढ़ ।

हर्ष का विषय है कि अग्रवाल सभा, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली श्री अग्रसेन जयन्ती तथा अपनी स्थापना के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर स्मारिका प्रकाशित कर रही है ।

महाराजा श्री लग्रसेन जी एक महान चक्रवर्ती और धर्मपरायण राजा थे । उन्होंने अपने शासनकाल में समाजवाद, राष्ट्रीय एकता, अहिंसा और मानवसेवा के आदर्श स्थापित किए थे, जो प्रकाश-स्तम्भ की तरह हमें सदा प्रेरित करते रहेंगे । हजारों साल पहले अग्रोहा की धरती पर समाजवाद को सच्चे मायनों में अमल में लाने वाले वह पहले इतिहास पुरुष थे । उन्होंने "एक रुपया और एक ईंट" जैसी अनोखी समाजवादी परम्परा प्रारम्भ की, इस परम्परा से समाज में समता और भाई-चारे की भावना मजबूत हुई । उनके लोकतन्त्रात्मक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सिद्धान्तों को अपनाकर उनके वंशज अग्रवाल भाइयों ने व्यापार तथा औद्योगिक क्षेत्र में अपनी साख स्थापित की है तथा दानवीरता में भी अपनी मिसाल कायम की है ।

महाराजा अग्रसेन का तत्कालीन वैभवशाली नगर अग्रोहा आज खण्डरात बनकर रह गया है । इस नगर के पुनरुत्थान में हर अग्रवाल भाई को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए । इसके लिए हरियाणा सरकार ने अग्रोहा विकास बोर्ड का गठन किया है और उसमें प्रतिष्ठित अग्रवाल बन्धुओं को सम्मिलित किया गया है । इस बोर्ड ने अग्रोहा के समग्र विकास हेतु जहां आवासीय, औद्योगिक क्षेत्र एवं मण्डी आदि बनाने का निश्चय किया है, वहीं महाराजा अग्रसेन मैडीकल कालेज बनाने का निर्णय भी किया है । इसके निर्माण का आधा खर्च हरियाणा सरकार देगी तथा आधा खर्च समस्त अग्रवाल समाज द्वारा एकत्र करके दिया जायेगा ।

महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती के इस पुनीत अवसर पर मैं सभी अग्रवाल बन्धुओं से अग्रोहा के जीर्णोद्धार तथा महाराजा अग्रसेन मैडीकल कालेज के निर्माण कार्य के महायज्ञ में पूरा-पूरा योगदान देने की अपील करता हूं । उस महान पुरुष के प्रति यही आत्मिक एव सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं भेजता हूं ।

—वनारसी दास गुप्त

श्री ब्रजभूषण गुप्त
मन्त्री
अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी
190, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-7

सन्देश

दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
अध्यक्ष : श्री रतन लाल गर्ग
R-7, नेहरु इन्क्लेव (कालकाजी)
नई दिल्ली-110019
फोन : 6435220

आदरणीय श्री गुप्त जी,

सादर नमस्ते।

अत्र कुशलं तत्राऽस्तु।

आपका पत्र क्रमांक 2046/6 दिनांक 2.8.89 का प्राप्त हुआ था। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अग्रवाल सभा विवेकानन्दपुरी, महाराजा अग्रसेन जयन्ती प्रतिवर्ष की भांति मना रही है तथा इस वर्ष इस शुभ-अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी कर रही है। मैं जयन्ती महोत्सव एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता हेतु अपनी तथा दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन की ओर से शुभकामनाएं देता हूं।

मैंने अपने समाज में कार्य करते हुए यह अनुभव किया है कि युवा पीढ़ी का योगदान अपने समाज के संगठनों को जितना चाहिए उतना नहीं मिल रहा है। इस दिशा में अपने समाज को विशेष रुप से देने की आवश्यकता है। सामाजिक क्षेत्र में प्रौढ़ युवा वर्ग को या तो उचित सम्मान सुविधा नहीं दे पा रहे या युवा पीढ़ी अपना सहयोग देने में असमर्थ हो रहा है। कुछ जगहों पर तो, जैसे नरेला मण्डी, (दिल्ली प्रदेश), सम्भल मण्डी (जिला-मुरादाबाद) में प्रौढ़ एवं युवा वर्ग का बहुत ही सुहृदय समन्वय देखने को मिला है। यह समाज को आगे ले जाने की ओर आशा युक्त चरण है। अपनी क्षेत्रीय शाखाएं इस बारे में गम्भीरता से सोचकर युवा शक्ति का सहयोग प्राप्त करें तो बहुत ही लाभदायक रहेगा।

आपकी सभा ने अपने क्षेत्रीय समाज में काम करते हुए दिल्ली प्रदेश तथा अखिल भारतीय इकाइयों को पूर्ण सहयोग देते हुए एक लम्बी अवधि बारह वर्ष की पूर्ण की है। आपकी सभा अपने छोटे क्षेत्र में महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली कार्य कर रही है। इसके लिए मैं अपनी ओर से तथा दिल्ली प्रदेश की ओर से आपको एवं आपके कार्यकारिणी सभा के सदस्यों, अध्यक्ष, मंत्री तथा आपके सहयोगियों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है आपकी प्रादेशिक इकाइयों को सहयोग देने में प्रत्येक क्षेत्रीय संस्थाओं में आगे ही रहेगी।

महाराजा अग्रसेन जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं कामना करता हूं कि हमारा समाज अपने पूर्वजों के बताए हुए रास्ते पर चलकर समाज में समता एवं एकता ला सके।

शुभकामनाओं सहित।

श्री ब्रजभूषण गुप्त
मंत्री, अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी (पंजीकृत)
190, विवेकानन्द पुरी आजाद मार्ग,
दिल्ली-110007

भवदीय
रतन लाल गर्ग
अध्यक्ष

महाराजा अग्रसैन जयन्ती पर शुभकामनाएं

इन्द्रप्रस्थ एजेन्सीज

F-4C, शास्त्री नगर, नहरवाली मेन रोड,
दिल्ली - 110052

वितरक एवम् विक्रेता :
JOHNSON टाइल्स सैनिटरीवेयर
A. G. K. पी०बी०सी० पाईप्स, बर्जर पेंटस

सौजन्य से : ओम नारायण गोयल
119, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली

फोन : दुकान : 518472 निवास : 772960

खुशी का रहस्य त्याग है।

आटे तथा किरयाना के थोक व खुदरा व्यापारी

सीताराम सतीश कुमार
अग्रवाल स्टोर
भगवती ट्रेडिंग कम्पनी

18/111, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला,
दिल्ली-110007

दूरभाष : 512924

महाराजा अग्रसेन जयन्ती

के अवसर पर

शुभ कामनाओं के साथ

मांगे लाल रुस्तगी

कमप्यूटर मशीनों पर बने बढ़िया क्वालिटी के ऊनी स्वेटर, जर्सी आदि के निर्माता

कपिल एन्टरप्राईज - ऊनी इण्डिया

194, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-110007

दूरभाष : 518319

जहां सत्य है वहीं आनन्द है ।

SARDARI LAL KASERA

Ferrous & Non-Ferrous Metal Merchants & Commission Agents

LEADING STOCKISTS OF :

Stainless Steels, Brass, Copper, Copper Wire, Aluminium & Aluminium Wire, Rivets etc.

666, GALI NO. 11, SADAR BAZAR, DELHI-110006

Phones : Off. : 771664 Resi. : 526559, 730744

With Best Compliments from :

Hindustan Insulations (P) Limited

Manufacturers of :

- Multicore Telephone Cables
- Jumper Wires
- Hook-up & Panel Wiring Cables
- Flexibles
- Auto Cables
- Insulation Sleeves & Tapes
- Armoured Telephone Cables
- Co-Axial & Microphone Cables

Regd. Office :
'MUDGIL BHAWAN. 4762/63, PRATAP STREET,
23, DARYAGANJ, NEW DELHI-110002

Tel. No. : 273905 Telex : 031-63357 DCCL IN Grams : DELWIRE

Works :
31-A, NEW INDUSTRIAL TOWNSHIP, FARIDABAD-12100 (Haryana)
Tel. 81-22309/81-26172

For Consistent Accuracy and Durability

Please Insist on

"EVERLAST"

WIGHBRIDGES AND ALL TYPES OF WEIGHING EQUIPMENTS

Manufacturers and Exporters :

Ashoka Metal Works & Co. (Regd.)

B-17, Street No. 9, Anand Parbat, Industrial Area,
NEW DELHI-110005

Phones : Off. : 5722669, 5/25994 Res. : 5∠6210

Cable : "EXACTWEIGH"
Telex : 031-61197 SKO IN
031-77255 OPT IN
Fax : 91(11) 585563.

With

Best

Compliments

from :

Always Insists on :

ROOPLON COMEX, B.R.
NYLON SOCKS

Manufactured by :

ROOP HOSIERY FACTORY

B-1, Rehman Market, Ist Floor, Sadar Bazar,
DELHI - 110 006

Off. : 511551 — 735971
Fac. : 524133 — 517713
Res. : 512714 — 736028

मन का खोट व्यक्ति को निर्भय नहीं रहने देता।

With Best Compliments From :-

Kulwant Rai Bansal & Bharat Bhushan Bansal

93, VIVEKANAND PURI, DELHI-110007

Bansal Metal Industries Pvt. Ltd.

Factory :

G-6, UDYOG NAGAR, (NANGLOI), DELHI-110041

Phones : Fac. & Off. : 5472237, 5471440 Resi. : 737727, 779311

अपनी बात !

हमारे देश में तमाम राजनैतिक दल और राज्यों, राष्ट्र की सरकार समाजवाद की स्थापना के के लिए समान रुप से संकल्प करती रहती हैं। यह वही समाजवाद है, जिसे हमारे जनक महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य अग्रोहा में विचार ही नही, व्यवहार में भी जन्म दिया था। यह अलग बात है कि समाजवाद को समकालीन राजनैतिक चिंतन करते समय राष्ट्र के पूर्वज अग्रसेन की अवधारणा को नजरअंदाज कर हम मार्क्स, लेनिन और माओ के विदेशी विचारों की जय-जय करते हैं। आयातित विचारों के अंधानुकरण के पीछे अज्ञान ही कहा जा सकता है। महाराजा अग्रसेन अवतार नहीं, इतिहास पुरुष थे और इतिहास से नकारा नहीं जा सकता। आज जबकि भारत के भाग्य को बनाने के लिए अग्रवाल समाज व्यापार के परंपरागत क्षेत्र के अतिरिक्त सैनिक और असैनिक सभी सेवाओं में सम्माजनक स्थिति में है, इन विचारों को प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्नों की सार्थकता ज्यादा लगती है। राजनीति के क्षेत्र में लगे लोगों के लिए यह ज्यादा सुगम है। यह हरियाणा के उपमुख्य मंत्री श्री बनारसी दास गुप्त ने साबित भी कर दिया है। इति श्री हो चुके अग्रोहा नगर के इतिहास को जीवित करने की उनकी इच्छा सराहनीय है। इस बारे में देवीलाल सरकार ने उनका साथ दिया है। इन सुकार्यो में साथ देना हमारा भी कर्तव्य है।

मांगे लाल रुतस्गी

अग्रसेन जयन्ती पर विवेकानन्द पुरी की अग्रवाल सभा इस स्मारिका के जरिये अपने पूर्वजों को प्रणाम करती है। महाराजा अग्रसेन की समाजवादी व्यवस्था के अनुरुप समाज के कमजोर वर्ग को सबल बनाने की अपील करती है। इस स्मारिका से भी महाराजा अग्रसेन के विचारों को आप तक पहुंचाने में कोई मदद मिलती है तो यह उन लेखकों का प्रयास है जिनकी रचनाएं संग्रहित हैं। खामियों के लिए संपादक के नाते मैं क्षमा चाहूंगा। मैं क्षमा उनके लिए भी चाहूंगा जो महाराजा अग्रसेन जैसे महामानव की संतान होने के कारण दहेज दानव बनकर समाज को दूषित कर रहे हैं। धन का दिखावा कर कमजोरों के मन को दर्द से भरने वालों के लिए मैं शर्मिन्दा हूं। दहेज दानव और दिखावे को दूर करना ही महाराजा अग्रसेन को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कमजोर की मदद ही महाराजा अग्रसेन के विचारों पर चलना होगा। अग्रसेन जयन्ती पर ऐसा करने की क्या हम सभी को शपथ नहीं लेनी चाहिए ?

—मांगे लाल रुस्तगी

हमारे आर्थिक सहयोगी

(विज्ञापन दाता)

नाम	पता		राशि (रुपयों में)
श्री विशन दयाल गोयल	231,	विवेकानन्द पुरी	1100
श्री राम किशन गुप्ता	124	,,	750
श्री मनोज गुप्ता	115	,,	750
श्री एस० आर० जैन	102	,,	500
श्री जय प्रकाश गुप्ता	130	,,	500
श्री विरखा राम गुप्ता	160	,,	500
श्री वेद प्रकाश बंसल	172	,,	500
श्री योगराज गोयल	244	,,	500
श्री एस० एस० अग्रवाल	65	,,	500
श्री वी० डी० गोयल	13	,,	500
श्री राम किशन अग्रवाल	23	,,	500
श्री भरत सिंह गुप्ता	94	,,	500
श्री देवेन्द्र गुप्ता	94	,,	500
श्री कुलवन्त राय बंसल	93	,,	500
श्री बलबीर सिंह अग्रवाल	89	,,	500
श्री पन्ना लाल गुप्ता		बाग कड़े खां	500
मैं० आर० वी० एंड सन्स		भिवानी	500
मैं० दिल्ली क्लाथ होलसेल शाप		रोहतक	500
श्री तारा चन्द खन्डेलवाल		(द्वारा श्री मांगे लाल रुस्तगी)	500
श्री अरुण जैन		,,	500
मैं० पाल ट्रेडर्स		,,	500
मैं० जय इन्जिनियरिंग वर्कस		(द्वारा श्री एम० सी० सांघो)	500
मैं० सीट टायर्स		,,	500
मैं० इण्डियन ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन		(द्वारा श्री एम० सी० गुप्ता)	500
मैं० नेशनल टेक्सटाइल कार्पोरेशन		,,	500
मैं० हिन्दुस्तान इन्सुलेशन्स प्रा० लि०		(द्वारा श्री ओम सिहल)	250
श्री डाल चन्द गुप्ता	193,	विवेकानन्द पुरी	250
श्री नरेश गुप्ता	218	,,	250
श्री हरि प्रकाश गुप्ता	223	,,	250

नाम	पता	राशि (रुपयों में)
श्री सुनील कुमार रुस्तगी	194, विवेकानन्द पुरी	250
श्री परमातो लाल	207 ,,	250
श्री रामानन्द गोयल	145 ,,	250
श्री राजेन्द्र कुमार रुस्तगी	126 ,,	250
श्री राधे श्याम खंडेलवाल	165 ,,	250
श्री हरि बाबू माहेश्वरी	41 ,,	250
श्री ओम नारायण गोयल	119 ,,	250
श्री सीताराम गुप्ता	पूर्वी मोती बाग	250
श्री शेर जंग हंस	215, विवेकानन्द पुरी	250
श्री अशोक गुप्ता	155 ,,	250
श्री ओम प्रकाश गोयल	पदम नगर	250
श्री अशोक कुमार	233, विवेकानन्द पुरी	250
श्री सुभाष चन्द गुप्ता	198 ,,	250
श्री भगवान स्वरूप जैन	164 ,,	250
श्री वेद प्रकाश गुप्ता	50 ,,	250
श्री प्रेम चन्द जैन	7 ,,	250
श्री किशन चन्द गुप्ता	247 ,,	250
श्री श्याम लाल मित्तल	105 ,,	250
श्री नानू राम गुप्ता	151 ,,	250
श्री रामेश्वर दास अग्रवाल	त्रिनगर	250
श्री फूल चन्द गुप्ता	64, विवेकानन्द पुरी	250
श्री कपूर चन्द गोयल	101 ,,	250
मैं० उमेद ब्रादर्स	दिल्ली	250
मैं० दीपक कांस्ट्रक्शन क०	,,	250
श्री राज कुमार	,,	250
श्री डी० पी० गुप्ता	,,	250
मैं० गुप्ता टैण्ड एंड लाइट	,,	250
श्री प्रदीप कुमार गुप्ता	,,	250
श्री विजय कुमार गुप्ता	,,	250
मैं० एम० के० कंस्ट्रक्शन कं०	,,	250
मैं० खंडेलवाल कंस्ट्रक्शन कं०	,,	250

वर्तमान पदाधिकारी (1989-90)

श्री सूरज भान गुप्ता
प्रधान

श्री ब्रज भूषण गुप्त
मन्त्री

श्री रामेश्वर दयाल गर्ग
उप प्रधान

श्री शिव धन गुप्ता
उप मन्त्री

सुरेन्द्र प्रकाश
आन्तरिक लेखा निरीक्षक

श्री फूल चन्द गुप्ता
कोषाध्यक्ष

वर्तमान सदस्य कार्यकारिणी (1989-90)

श्री मसद्दी लाल

श्री रतन लाल गोयल

श्री माया प्रकाश

श्री कपूर चन्द गोयल

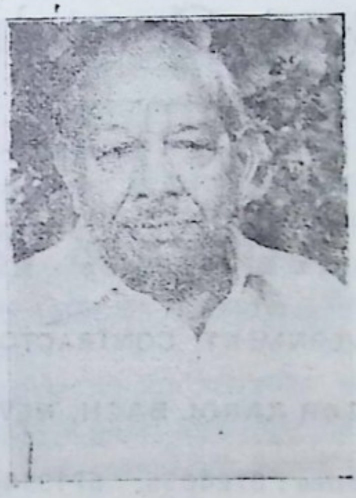

श्री भगवत स्वरुप

श्री ओ० पी० गर्ग

अग्रसेन जयन्ती समारोह

मच पर :- सर्व श्री इन्द्राज सिंह अग्रवाल, सोहन लाल गोयल, जय प्रकाश अग्रवाल, किशन दयाल गोयल, महेश चन्द्र शर्मा, शिव प्रकाश गुप्त, विष्णु चन्द्र गुप्त व ब्रज भूषण गुप्त ।

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti.

With Best Compliments
from :

VIJAY KUMAR GUPTA

GOVERNMENT CONTRACTOR

1/11676, SAT NAGAR KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

Phones : 5724655, 5719140

संयोजक की कलम से

पिछले कई वर्षों से मुझे यह विचार अनेक बार आता रहा कि हमें भी अपनी सभा की एक स्मारिका प्रकाशित करनी चाहिए। किन्तु अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा करते-करते समय अपनी निर्बाध गति से चलता रहा और मैं यह इच्छा अपने मन में ही संजोए रहा। इस बार कार्यकारिणी की बैठक में मेरे इस सुझाव पर कि हमें अग्रसेन जयन्ती पर होने वाले व्यय की व्यवस्था अन्य स्रोतों से करनी चाहिए, हमारे पूर्व मन्त्री श्री प्रहलाद राय गर्ग ने स्मारिका प्रकाशन का सुझाव रखकर मानो मेरे मन की बात ही कह दी। उन का यह सुझाव कार्यकारिणी द्वारा तुरन्त स्वीकार कर लिया गया और मेरे संयोजकत्व में सर्वश्री प्रहलाद राय गर्ग, मुसद्दी लाल, कपूरचन्द गोयल, माया प्रकाश गुप्ता व रामेश्वर दयाल गर्ग पर आधारित एक उप-समिति का गठन कर दिया गया। मेरे लिये अपने सामाजिक जीवन में स्मारिका प्रकाशन कार्य का यह पहला अवसर था अतः कुछ हिचक होना स्वाभाविक था किन्तु 'जहां चाह वहां राह' वाली बात तथा अपने सहयोगियों की शक्ति एवं कार्य क्षमता पर भरोसा भी था। इसी बोच श्री मांगे लाल रुस्तगी ने स्मारिका के सम्पादन का कार्य स्वयं संभालने का आश्वासन देकर मेरा आधा भार हल्का कर दिया। इसी प्रकार स्मारिका के लिए विज्ञापन जुटाने का कार्य, जिसको मैं कठिनतम कार्य मान रहा था, हमारे प्रधानश्री सूरज भान गुप्ता द्वारा अपने प्रभाव का उपयोग कर के काफी सरल कर दिया गया। सभी कालोनी निवासियों ने इस कार्य में हमें आशातीत सहयोग देकर हमारा उत्साह द्विगुणित कर दिया।

समाज के जाने माने नेताओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा हमारी प्रार्थना पर अपने प्रेरणाप्रद संदेश एवं समयोचित रचनाऐं यथासमय उपलब्ध करा कर हमें उचित मार्ग दर्शन प्रदान किया। इस संदर्भ में मैं श्री बनारसीदास गुप्त, श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल, श्री रतन लाल गर्ग व श्री शिव प्रकाश गुप्त के प्रति विशेष रूप से आभारी हूं जिन्होंने मेरे जैसे साधारण कार्यकर्ता को अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया।

हमने अपनी ओर से स्मारिका को एक संग्रहणीय रूप देने का यशाशक्ति प्रयत्न किया है किन्तु यह हमारा प्रथम प्रयास होने के कारण अनेकों भूल संभव हैं जिनके लिये, आशा है, प्रबुद्ध पाठक गण हमें क्षमा करेंगे। इसी प्रकार जिन सज्जनों की रचनाएं, स्थानाभाव के कारण, हम प्रकाशित न कर सके उन से भी हम क्षमाप्रार्थी हैं।

सहयोग के लिये पुनः धन्यवाद,

—बृजभूषण गुप्त

घर का जोगी . . .

लाला ज्ञानी राम

एक देहाती कहावत है "घर का जोगी जोगड़ा आन गांव का सिद्ध" अर्थात हमारे पडोस में, मोहल्ले में, नगर में चाहे कितना भी महत्वपूर्ण व्यक्ति रहता हो हम उसको बिल्कुल महत्व नहीं देते । यह कहावत अपनी वैश्य बिरादरी में शत प्रतिशत सही उतरती है । वैश्यों में अनेकों एक से एक बढ़ कर प्रसिद्ध गुणी एवं महत्वपूर्ण व्यक्ति हुए हैं किन्तु बिरादरी के नाते हम उनका सम्मान करना सीखे ही नहीं ।

इसी बात को ध्यान में रखकर हमारी सभा की कार्य कारिणी में यह विचार आया कि क्यों न हम अपने क्षेत्र के किसी सजातीय सामाजिक कार्यकर्ता का सार्वजनिक सम्मान करने की परम्परा शुरु करें । इस संदर्भ में सभी के मुंह पर एक ही नाम आया "लाला ज्ञानी राम" । अत: निश्चय हुआ कि इस वर्ष अग्रसेन जयन्ती समारोह में लाला ज्ञानी राम को सम्मानित किया जाय ।

आज से लगभग 70 वर्ष पूर्व गांव जाखोली जिला सोनीपत में जन्मे लाला ज्ञानी राम का बचपन गांव में ही गुजरा । 1938 में दिल्ली आकर डी०सी०एम० में नौकरी करने लगे परन्तु इस व्यापारी पूत का मन तो व्यापार में रमा था अत: मांडल बस्ती में एक दुकान लेकर बीड़ी, सिगरेट व साबुन का थोक व खुदरा व्यापार चालू कर दिया और आगे चलकर एक बड़े व्यापारी के रुप में उभरे । लाला ज्ञानी राम बचपन से ही सामाजिक कार्यों में रुचि रखते थे । 1973 में विवेकानन्दपुरी में अपना मकान बनाया तथा यहां के प्रत्येक काम में आगे रहने लगे । मन्दिर की स्थापना व निर्माण के कार्यों में सारे-सारे दिन लगे रहते । कालोनी में आपस में उत्पन्न हुए विवादों को निबटाने में सबसे पहले इनका नाम आता और यह उन विवादो को अपनी सूझबूझ से आराम से निबटा देते । लाला ज्ञानी राम लगातार कई वर्षो तक मन्दिर समिति के प्रधान रहे । आप ने अग्रवाल सभा के प्रधान पद को भी सुशोभित किया । वे अत्यन्त सौम्य स्वभाव व शान्ति की मूर्ति हैं । हम ईश्वर से उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हैं जिससे समाज अधिकाधिक लाभान्वित हो सके ।

❋

अध्यक्षीय उद्गार

अग्रसेन जयन्ती के इस पावन पर्व पर मैं सभी महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। हमारी सभा की स्थापना आज से बारह वर्ष पूर्व हुई थी। विवेकानन्द पुरी के दो सौ प्लाटों में लगभग एक सौ पचास प्लाट डी०सी०एम के कर्मचारियों के थे इनमें अफसर, क्लर्क तथा वर्कर सभी समुदाय के लोग थे, एक ही कम्पनी में काम करने के नाते सभी प्रायः एक दूसरे को जानते थे तथा परस्पर मान-सम्मान की भावना रखते थे। इसी वातावरण में पारिवारिक सम्बन्ध बढ़े और कालोनी में एक दूसरे के दुःख सुख में सम्मिलित होते हुए परस्पर आत्मीयता का अनुभव होने लगा। कालोनी के अधिकांश निवासी वैश्य समुदाय से सम्बन्धित थे अतः वैश्य संगठन का अंकुर फूटा जो अब बारह वर्ष में पूर्ण वृक्ष का रूप ले चुका है। मुझे यह कहते हुए तनिक भी संकोच नहीं है कि इस सभा को प्रारम्भ से यहां तक पहुंचाने का श्रेय सभा के अनुभवी एवं कुशल कार्यकर्ताओं के साथ साथ यहां के निवासियों को भी है जिन्होंने समय समय पर सभा को तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग दिया।

मैं सामाजिक कार्यों में रूचि रखने के नाते इस सभा की स्थापना से ही इससे सम्बद्ध रहा हूं। इस वर्ष मुझे अध्यक्ष पद का भार सौंपा गया जिसे मैंने संकोच सहित किन्तु दृढ़ निश्चय के साथ स्वीकार किया है। गत बारह वर्षों में हमने अनेकों कार्य किए हैं किन्तु अभी अनगिनत कार्य करने शेष हैं। यहाँ एक बात जो मुझे विशेष कचोटती रहती है वह है बारात के जलूस में हमारे नवयुवकों का शराब पीकर नाचना, और अब तो इसमें हमारी लड़कियाँ तथा बहूएं भी पीछे नहीं रहीं हैं। यह एक प्रकार से वैश्य समाज के उज्जवल नाम पर कलंक है। मेरा नम्र निवेदन है कि जितना शीघ्र हो सके हमें इस कलंक को समूल मिटा देना चाहिए, साथ ही विवाहादि अवसरों पर मितव्ययिता तथा सादगी बरतनी चाहिए। सामाजिक संस्थाओं का कार्यक्षेत्र अत्यंत विस्तृत होता है और कार्यकर्ता सदैव ही गिने चुने होते हैं। फिर भी जैसा और जो कुछ हो सकता हो, प्रयास करना हमारा कर्तव्य है। मुझे पूर्ण आशा ही नहीं अपितु विश्वास भी है कि यदि हम निरन्तर अपने कर्तव्य पालन में तत्पर रहें तो निश्चय ही एक दिन अपने प्रयास में सफल होंगे।

इसी आशा और विश्वास के साथ सभी के सहयोग में दृढ़ आस्था रखते हुए कदम से कदम मिलाकर चलते हुए हम अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सदैव आगे बढ़ते जांय यही भगवान से प्रार्थना है। धन्यवाद,

—सूरज भान गुप्ता

अग्रवाल सभा विवेकानन्दपुरी, दिल्ली

सदस्य-सूची

विवेकानन्दपुरी

नाम	पता म.नं.	फोन नं.	गोत्र	व्यवसाय
श्री प्रेम चन्द जैन	7	529972	गोयल	व्यापार
श्री वी०डी० गोयल	13	773497	गोयल	व्यापार
श्री दीन दयाल मित्तल	14	—	मित्तल	सेवा निवृत
श्री बाल किशन मित्तल	14	—	मित्तल	व्यापार
श्री राम कुमार बंसल	15	516690	बंसल	सरकारी नौकरी
डा० एम०एल० गुप्ता	16	516079	मित्तल	डाक्टर
श्री भागीरथ प्रसाद	19	—	गर्ग	सेवा निवृत
श्री मदन लाल गुप्ता	22	—	सिंहल	नौकरी
श्री राम किशन अग्रवाल	23	771856	गर्ग	व्यापार
श्री चमन लाल जैन	25	775751	सिंहल	व्यापार
श्री बाबूराम अग्रवाल	26	516182	गर्ग	सेवा निवृत
श्री जय भगवान गुप्ता	30	—	गर्ग	सेवा निवृत
श्री राम चन्द्र गुप्ता	32	—	गर्ग	सेवा निवृत
श्री सुरेन्द्र प्रकाश गुप्ता	34	771322	गर्ग	लैक्चरर
श्री प्रहलाद राय गर्ग	35	737112	गर्ग	चार्टर्ड एकाउन्टेंट
श्री सूरजभान गुप्ता	39	776709	मंगल	व्यापार
श्री शिव चरण गुप्ता	39	776709	मंगल	व्यापार
श्री शिवकुमार गुप्ता	39	776709	मंगल	ठेकेदार
श्री कपूर चन्द	40	—	गर्ग	सेवा निवृत
श्री श्याम सुन्दर गुप्ता	40	5720731	मित्तल	व्यापार
श्री राधे श्याम	40	—	गर्ग	व्यापार
श्री श्रवण कुमार	40	—	गर्ग	मुनीम
श्री रतनलाल गोयल	41	513056	गोयल	सेवा निवृत
श्री हरि बाबू माहेश्वरी	41	516575	गगरानी	व्यापार
श्री ज्ञानी राम	42	779847	कुच्छल	व्यापार
श्री मुन्ना लाल	44	—	कंसल	सेवा निवृत

नाम	पता म.नं.	फोन नं.	गोत्र	व्यवसाय
श्री रमेश चन्द गुप्ता	46	—	कंसल	—
श्री सुरेश चन्द गुप्ता	46	—	कंसल	व्यापार
श्री भँवर लाल धम्मानी	49	—	—	—
श्री जय प्रकाश गुप्ता	50	512467	मंगल	सरकारी नौकरी
श्री वेद प्रकाश गुप्ता	50	512467	बंसल	व्यापार
श्री महावीर चन्द सांघी	51	529982	—	नौकरी
श्री प्रेम चन्द अग्रवाल	55	734310	मित्तल	नौकरी
श्री हुकम चन्द गोयल	55	510443	गोयल	सेवा निवृत
श्री सूरज भान गुप्ता	56	513433	गोयल	सेवा निवृत
श्री देश राज अग्रवाल	57	771519	बंसल	सेवा निवृत
श्री मित्र सेन गुप्ता	63	—	सिंहल	सेवा निवृत
श्री माया प्रकाश गुप्ता	63	—	सिंहल	नौकरी
श्री फूल चन्द गुप्ता	64	511735	गर्ग	सेवा निवृत
श्री अशोक कुमार गुप्ता	64	511735	गर्ग	नौकरी
श्री अनिल कुमार गुप्ता	64	511735	गर्ग	नौकरी
श्री अरुण कुमार गुप्ता	64	511735	गर्ग	नौकरी
श्री कैलाश चन्द गोयल	64	779293	गोयल	व्यापार
श्री श्याम सुन्दर गोयल	65	514857	गोयल	नौकरी
श्री पूर्ण चन्द गुप्त	66	—	मंगल	सेवा निवृत
श्री जयन्ती प्रसाद गोयल	68	518679	गोयल	सेवा निवृत
श्री राधे श्याम	68	772541	गर्ग	व्यापार
श्री शिव कुमार	71	779144	तायल	व्यापार
श्री राम किशन गुप्ता	72	777808	गोयल	सेवा निवृत
श्री अनूप चन्द गोयल	73	525939	गोयल	सेवा निवृत
श्री अनन्त राम	77	516369	गोयल	व्यापार
श्री सतनारायण गुप्ता	78	516514	गर्ग	सेवा निवृत
श्री धमपाल गुप्ता	82	526196	गर्ग	व्यापार
श्री राजकुमार गोयल	82	—	गोयल	व्यापार
श्री राम पत गुप्ता	87	774084	गर्ग	सेवा निवृत
श्री बलवीर सिंह अग्रबाल	89	777038	कुच्छल	व्यापार
श्री सुभाष चन्द अग्रवाल	90	513705	गर्ग	अध्यापक
श्री पदम सेन जैन	90	776081	गर्ग	नौकरी बैंक
श्री ज्योती प्रसाद गुप्ता	92	513874	गर्ग	सेवा निवृत

नाम	पता म.नं.	फोन नं.	गोत्र	व्यवसाय
श्री कुलवन्त राम बंसल	93	637727	बंसल	व्यापार
श्री बाबू राम अग्रवाल	97	—	सिंहल	सेवा निवृत
श्री मन मोहन अग्रवाल	98	77:865	गर्ग	व्यापार
श्री कपूर चन्द गोयल	101	521476	गोयल	इंजीनियर
श्री मुकेश कुमार गोयल	101	5732012	गोयल	व्यापार
श्री राकेश गोयल	101	519568	गोयल	ठेकेदार
श्री एस०आर० जैन	102	511276	सुराना	व्यापार
श्री राम दास गुप्ता	104	5732230	मित्तल	व्यापार
श्री श्याम लाल मित्तल	105	515616	मित्ताल	नौकरी
श्री मक्खन लाल	108	—	बहत्रा	सेवा निवृत
श्री किशोरी लाल	111	519642	गोयल	सेवा निवृत
श्री सुभाष चन्द गुप्ता	111	—	गोयल	व्यापार
श्री चिरंजी लाल	115	771692	बरानीवाल	ब्यापार
श्री बाल किशन गर्ग	117	561091	गर्ग	नौकरी
श्री परमानन्द	118	524069	गोयल	ठेकेदार
श्री जगदीश कुमार गुप्ता	118	—	गोयल	नौकरी
श्री अजय कुमार गुप्ता	118	518067	सिंहल	नौकरी
श्री ओम नारायण गोयल	119	772960	गोयल	व्यापार
श्री दिनेश गोयल	119	5717124	गोयल	व्यापार
श्री राकेश गोयल	119	518472	गोयल	ब्यापार
श्री दौलत राम जिन्दल	121	779778	जिन्दल	ब्यापार
श्री राम किशन गुप्ता	124	521158	सिंगल	व्यापार
श्री सुरेश चन्द गर्ग	125	—	गर्ग	नौकरी
श्री मांगे राम गोयल	126	—	गोयल	सेवा निवृत
श्री राजेन्द्र कुमार	126	776002	रसतोगी	ब्यापार
श्री मोती राम गुप्ता	128	777240	कंसल	सेवा निवृत
श्री रोशन लाल	128	771854	गर्ग	ट्रांसपोर्टर
श्री जय प्रकाश गुप्ता	130	734369	भरकुटिया	ब्यापार
श्री जय नारायण गुप्ता	131	—	बंसल	सेवा निवृत
श्री राम दयाल	133	2927644	सिंहल	ब्यापार
श्री शिव कुमार	133	—	तायल	दलाली
श्री सुभाष चन्द गुप्त	137	521860	गर्ग	नौकरी
श्री मुसद्दी लाल	141	518815	गर्ग	सेवा निवृत

नाम	पता म.नं.	फोन नं.	गोत्र	व्यवसाय
श्री गोपाल कृष्ण	141	518815	गर्ग	नौकरी
श्री महावीर प्रसाद गुप्ता	143	—	मंगल	व्यापार
श्री राम गोयल	144	736864	गोयल	सेवा निवृत
श्री रामानन्द गोयल	145	737698	गोयल	सेवा निवृत
श्री वेद प्रकाश गर्ग	146	—	गर्ग	नौकरी
श्री साधू राम गर्ग	146	—	गर्ग	नौकरी
श्री भगवत स्वरूप	147	775240	गर्ग	सेवा निवृत
श्री दौलत राम	150	515630	सिंहल	सेवा निवृत
श्री नानू राम गुप्ता	151	770724	गर्ग	सेवा निवृत
श्री श्याम चरण गुप्ता	151	—	गर्ग	नौकरी
श्री उमाचरण गुप्ता	151	—	गर्ग	नौकरी
श्री आनन्द कुमार	151	—	गर्ग	व्यापार
श्री तारा चन्द	152	736638	गर्ग	व्यापार
श्री ओम प्रकाश गुप्ता	154	—	गर्ग	नौकरी
श्री सागर मल गुप्ता	155	528210	गर्ग	व्यापार
श्री अशोक गुप्ता	155	—	गर्ग	व्यापार
श्री राजकुमार गुप्ता	155	—	गर्ग	व्यापार
श्री राकेश कुमार गुप्ता	155	—	गर्ग	व्यापार
श्री प्रकाश चन्द गुप्ता	155	—	गर्ग	व्यापार
श्री जौहरी लाल गोयल	156	737640	गोयल	सेवा निवृत
श्री शिव कुमार गोयल	156	—	गोयल	नौकरी
श्री रोशन लाल जिन्दल	159	771083	जिन्दल	व्यापार
श्री जय भगवान जिन्दल	159	528759	जिन्दल	व्यापार
श्री नरेश कुमार जिन्दल	159	—	जिन्दल	व्यापार
श्री श्री भगवान जिन्दल	159	—	जिन्दल	व्यापार
श्री प्रमोद कुमार जिन्दल	159	—	जिन्दल	व्मापार
श्री विनोद कुमार जिन्दल	159	—	अिन्दल	व्यापार
श्री बिरखा राम	160	512714	गर्ग	व्यापार
श्री राम निवास अग्रवाल	160	736028	गर्ग	व्यापार
श्री राजकुमार गुप्ता	160	—	गर्ग	व्यापार
श्री रमेश चन्द गुप्ता	160	—	गर्ग	व्यापार
श्री ओम सिंहल	162	771866	सिंहल	नौकरी
श्री ज्ञान चन्द गुप्ता	163	—	सिंहल	नौकरी
श्री भगवान सिंह जैन	164	518181	गोयल	व्यापार
श्री राधे श्याम गुप्ता	165	524058	मालानी	व्यापार
श्री रतन लाल बथवाल	165	586782	मालानी	व्यापार
श्री दया चन्द गुप्ता	166	528743	गर्ग	सेवा निवृत

नाम	पता म. नं.	दूरभाष	गोत्र	व्यवसाय
श्री सुरेश कुमार अग्रवाल	162	771640	ऐरन	नौकरी
श्री श्री भगवान अग्रवाल	162	771640	ऐरन	नौकरी
श्री सूरज भान गुप्ता	18/142	—	गर्ग	सेवा निवृत
श्री हुकम चन्द मित्तल	18/137	511423	मित्तल	व्यापार
श्री नरसिंह दास गुप्ता	172/3C	515891	गर्ग	व्यापार
श्री सुमेर चन्द गुप्ता	172/3A	515891	गर्ग	व्यापार
श्री राज बहादुर	172/9C	—	सिंहल	व्यापार
श्री विनोद कुमार गुप्ता	172	511404	गर्ग	व्यापार
श्री सतीश चन्द रस्तोगी	91F	—	बोहडिया	व्यापार
श्री किशन रस्तोगी	18/91BA	526751	काश्व	व्यापार
श्री विमल प्रकाश रस्तोगी	18/153	513366	बोहडिया	नौकरी
श्री विशम्भर दयाल अग्रवाल	18/91	—	गोयल	नौकरी
श्री सत नारायण गर्ग	18/86B	—	गर्ग	व्यापार
श्री दिवान चन्द गुप्ता	87/2	776023	सिंहल	व्यापार
श्री नन्द किशोर गर्ग	18/136	513366	गर्ग	नौकरी
श्री रामेश्वर दास गुप्ता	18/136	513366	गर्ग	नौकरी
श्री राजेन्द्र कुमार मंगला	18/106	528610	मंगल	व्यापार
श्री कुंज बिहारी महेश्वरी	125	—	महेश्वरी	व्यापार
श्री रामफल मित्तल	18/75/1D	—	मित्तल	व्यापार
श्री नन्द किशोर गुप्ता	18/74	—	गर्ग	नौकरी
श्री जौहरी मल अग्रवाल	79/A-1	—	गर्ग	व्यापार
श्री सत नारायण मित्तल	18/82	516618	मित्तल	व्यापार
श्री राधे श्याम मित्तल	18/82	516618	मित्तल	नौकरी
श्री बृज मोहन बंसल	158	—	बंसल	नौकरी
श्री मदन लाल गुप्ता	18/91B	—	सिंहल	व्यापार
श्री मदन लाल जैन	120	731061	गोयल	व्यापार
श्री प्रीतम कुमार जैन	120	733769	गोयल	व्यापार
श्री सुरेश कुमार जैन	120	731061	गोयल	व्यापार
श्री हरिचन्द गोयल	18/120	516358	गोयल	व्यापार
श्री रविन्द्र गुप्ता	119/5	519328	गर्ग	व्यापार
श्री बाबूलाल बंसल	E118	777241	बंसल	व्यापार
श्री जय सिंह गुप्ता	F118	521873	कंसल	व्यापार
श्री रमेश चन्द जैन	18/63	516199	पदमावती पुरवाल	व्यापार
श्री फूल चन्द गुप्ता	172/5	515431	सिंहल	व्यापार

दिल्ली की अग्रवाल वैश्य संस्थाएँ

1. दिल्ली प्रादेशिक वैश्य सम्मेलन 4287/4, गली बहूजी, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006
2. श्री अग्रवाल विवाह समिति, 308-09, मोहन पैलेस, लोकल शापिंग सेन्टर, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034
3. वैश्य अग्रवाल सभा (पं.) ए-16, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016
4. अग्रवाल परिषद (पं.) सेक्टर 12, क्वार्टर, 238, रामाकृष्णा पुरम, नई दिल्ली-110022
5. वैश्य सभा दक्षिण दिल्ली (पं.) एम-74, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048
6. श्री रामेश्वरदास गुप्ता धर्मार्थ ट्रस्ट (पं.) डी-36, साउथ एक्सटेंशन-1, नई दिल्ली-110049
7. साउथ एक्सटेंशन अग्रवाल सभा, बी-25, हाउसिंग सोसायटी, साउथ एक्सटेंशन-1, नई दिल्ली-110049
8. अग्रवाल सभा, 54, मीठापुर, बदरपुर, दिल्ली-110044
9. श्री अग्रवाल समिति, 87, सम्मन बाजार, जंगपुरा-भोगल, नई दिल्ली-110014
10. वैश्य वेलफेयर एसोसिएशन (पं.) फ्लेट K-23/A, शेख सराय फेज-II, नई दिल्ली-110017
11. अग्रवाल पंचायत सभा, द्वारा अग्रवाल धर्मशाला, मेन बाजार, चिराग दिल्ली-110019
12. अग्रवाल समाज, ए-279, मोतीबाग-1, नई दिल्ली-110021
13. श्री वैश्य समाज (पं.) 16, राज नगर, सफरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-110023
14. अग्रवाल सभा विवेकानन्दपुरी, (पं.) 190, विवेकानन्दपुरी, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
15. अग्रवाल समाज (पं.) 2586, अग्रवाल धर्मशाला, त्रिनगर, दिल्ली-110035
16. श्री अग्रसेन समिति, 1910/145, गणेशपुरा 'ए', त्रिनगर, दिल्ली-110035
17. अग्रयाल सभा, ई-171, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052
18. अग्रवाल सभा (पं.) बीएम-7, पश्चिमी शालीमार बाग, दिल्ली-110052
19. श्री अग्रवाल सभा, 631, निमड़ी कालोनी, दिल्ली-110052
20. अग्रवाल धर्मार्थ ट्रस्ट (पं.) बी-3/272, पश्चिम विहार, दिल्ली-110063
21. अग्रवाल वैलफेयर सोसायटी, ड़ी-2, फेज-1, अशोक विहार, दिल्लो-110052
22. अग्रवाल सभा, एनडी-18, पीतमपुरा, दिल्ली-110034
23. वैश्य पंचायती ट्रस्ट, 190, विवेकानन्दपुरी, आजाद मार्ग सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
24. महाराजा अग्रसेन (अग्रवाल) आश्रम ट्रस्ट, 48, मॉडल बस्ती, नई दिल्ली-110005
25. वैश्य अग्रवाल सभा (पं.) 6/215, सुन्दर विहार, दिल्ली-110041
26. श्री महाराजा अग्रसेन धर्मार्थ सेवा संस्थान, बी-1527, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052
27. अग्रवाल भवन ट्रस्ट, 21/5, शक्ति नगर, दिल्ली-110007
28. वैश्य इन्टरनेशनल परिवार, 19/7, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

29. वैश्य संगठन सभा (पं.) 3784, नई बस्ती, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006
30. अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट (पं.) 4743-44, हरध्यान सिंह रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110005
31. अग्रवाल सभा, 2/सी/24, न्यू रोहतक रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110005
32. अग्रवाल पंचायती धर्मशाला ट्रस्ट 7783/3, अग्रवाल भवन, मॉडल बस्ती, नई दिल्ली-110005
33. केवलराम राधाकृष्ण गुप्ता धर्मार्थ ट्रस्ट, 111-मॉडल बस्ती, नई दिल्ली-110005
34. वैश्य मित्र मण्डल, 5/5755, देव नगर, करौल बाग, नई दिल्ली-110005
35. वैश्य अग्रवाल सभा (रामनगर) 7575/4, तेल मिल गली, राम नगर, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-110055.
36. वैश्य बीसा अग्रवाल पंचायत, 4688, गली उमराव, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006
37. अग्रवाल वैश्य मित्र मण्डल 4236, गली बहूजी, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006
38. वैश्य अग्रवाल परिषद, 4220, गली बहूजी, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006
39. श्री जुगल किशोर अग्रवाल ट्रस्ट, 4322, गली भैरों वाली, नई सड़क, दिल्ली-110006
40. अग्रवाल पंचायत (पं.) 4696, शोरा कोठी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055
41. वैश्य अग्रवाल गिदोड़ियान सभा, सर सैयद अहमद रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
42. मारवाड़ी यंगमैन एसोसिएशन, मैं० मुरारी लाल परमानन्द, 4281, गली भैरों वाली, नई सड़क, दिल्ली-110006
43. पंचायत मोहल्ला बर्दालियां, 2647, चूड़ी वालान, दिल्ली-110006
44. वैश्य अग्रवाल सभा, ए-12/2, चेतराम मार्ग, मौजपुर, दिल्ली-110053
45. मण्डोला समिति, 343ए/1750, भोला नाथ नगर, दिल्ली-110032
46. वैश्य अग्रवाल सुधार सभा, ए-24 मानसरोवर पार्क, जी०टी० रोड, शाहदरा दिल्ली 110032
47. वैश्य सभा, छज्जूपुर, शाहदरा, दिल्ली-110032
48. अग्रवाल सभा (पं.) सी-181, विवेक विहार दिल्ली-110032
49. अग्रवाल नवयुवक सभा, 380/2, पठानपुरा शाहदरा, दिल्ली-110032
50. महाराजा अग्रसेन क्लब, 546, गली जैन मन्दिर, छोटा बाजार, शाहदरा दिल्ली-110032
51. वैश्य अग्रवाल सम्मेलन. 139, पटपड़ गंज, दिल्ली-110092
52. महाराजा अग्रसेन हास्पीटल चेरीटेबल ट्रस्ट (पं.) पंजाबी बाग, दिल्ली-110026
53. युवा अग्रवाल समाज, रघुवीर नगर, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110027
54. अग्रवाल प्रेम सभा (पं.) सी-3/50, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
55. अग्रवाल सभा (पं.) बी-1/254, यमुना विहार, दिल्ली-110053
56. अग्रवाल संगठन, 40 सी/वाई I दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110032
57. अग्रवाल सभा, बी-11-ए, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
58. अग्रवाल बगीची ट्रस्ट (पं.) अग्रवाल भवन, मार्ग-10, पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026
59. वैश्य सभा (पं.) इन्द्रपुरी-नरायणा क्षेत्र, ए-72, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र फेज-I, दिल्ली-110028
60. अग्रवाल वैश्य सभा (पं.) बी-293, हरी नगर, नई दिल्ली-110064
61. अग्रवाल सभा ट्रस्ट, डब्ल्यू एल./15-ए उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

62. वैश्य उपकारिणी सभा, श्री गौरी शंकर मन्दिर, जी-ब्लाक, करमपुरा, शिवाजी मार्ग, नई दिल्ली-110015
63 श्री अग्रवाल सभा, डी-9, न्यू मुलतान नगर, नई दिल्ली-110056
64. अग्रवाल परिषद (पं.) अग्रवाल भवन, जयदेव पार्क, नई दिल्ली-110026

●

अखिल भारतीय अग्रवाल/वैश्य संस्थाएं

1. अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, डी-57, साउथ एक्सटेंशन भाग-I, नई दिल्ली-110049
2. अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, 7/28, ज्वाला नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032
3. अखिल भारतीय वैश्य महासभा, 1/11बी, पाहवा मैंशन, आसफअली रोड, नई दिल्ली-110002
4. अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा, नया मारवाड़ी कटरा, नई सड़क, दिल्ली-110006
5. अखिल भारतीय महाजन शिरोमणी सभा, 3774, नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
6. अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़ (उ०प्र०)
7. अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन, सी.के. 24/13, कटरा गोपीनाथ, कुंजगली, वाराणसी
8. अखिल भारतीय अग्रवाल महासंघ, 4136, नया बाजार, दिल्ली-110006
9. अखिल भारतीय राजवंशी अग्रवाल महासभा, बंसल भवन, रामनगर, रुड़की (उ०प्र०)
10. अवधवाल वैश्य महासभा (पंजी.), 47, गुरुनानकपुरी, रजवान बाजार, मेरठ छावनी (उ०प्र०)
11. अखिल भारतीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा 6/60 WEA करौल बाग, नई दिल्ली-110005

●

दिल्ली स्थित प्रमुख अग्रवाल धर्मशालाओं की सूची

1. श्री अग्रवाल भवन : अग्रसेन नगर (माडल बस्ती), नई दिल्ली-110005
2. श्री अग्रवाल धर्मशाला : त्रिनगर, दिल्ली-110035
3. श्रीं अग्रवाल धर्मशाला : बी-1527, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052
4. श्री अग्रवाल भवन : 5/2 जयदेव पार्क. नई दिल्ली-110026
5. श्री अग्रवाल भवन : 21/5, शक्ति नगर, दिल्ली-110007
6. श्री अग्रवाल भवन : माडल टाउन, ब्लाक डी, दिल्ली-110009

7. श्री अग्रवाल बगीची ट्रस्ट धर्मशाला : पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026
8. श्री अग्रवाल धर्मशाला : हरध्यानसिंह रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110005
9. श्री अग्रवाल भवन : आदर्श नगर, दिल्ली-110033
10. धर्म भवन : साउथ एक्सटेंशन भाग एक, नई दिल्ली-110049
11. श्री अग्रवाल धर्मशाला : तेल मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-110055
12. धर्मशाला मन्दिर गिदौड़ियान : गली बरना, महाराजा अग्रसेन मार्ग, दिल्ली-110006
13. महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल एवं धर्मार्थ चिकित्सालय : साईट नं० 9, डी ब्लाक, अशोक विहार, दिल्ली-110052
14. श्री अग्रवाल धर्मशाला : न्यू मल्तान नगर, दिल्ली-110056
15. श्री अग्रवाल धर्मशाला : उत्तम नगर, नजफगढ़ रोड. दिल्ली-110059
16. श्री मुसद्दी लाल जी की धर्मशाला : अनाज मण्डी, शाहदरा, दिल्ली-110032
17. श्री परमानन्द जी की धर्मशाला : शाहदरा, दिल्ली-32
18. धर्मशाला मोती लाल सर्राफ : छोटा बाजार, शाहदरा दिल्ली-110032
19. धर्मशाला लाला अम्बे प्रसाद : मौहल्ला महाराम, शाहदरा, दिल्ली-110032
20. धर्मशाला लाला शिब्बन लाल जी : अनाज की मण्डी, शाहदरा दिल्ली-110032
21. धर्मशाला लाला बैनीमल जी : गुड़याई मौहल्ला, शाहदरा, दिल्ली-110032
22. राजेन्द्र अग्रवाल धर्मशाला : बड़ा ठाकुरद्वारा, शाहदरा, दिल्ली-110032
23. धर्मशाला लाला जयभगवान : बड़ी रामलीला ग्राउंड, मुकेश नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032
24. गोपाल धर्मशाला : बड़ा बाजार, शाहदरा, दिल्ली-110032
25. महाराजा अग्रसेन भवन : विवेक विहार, शाहदरा, दिल्ली-110032
26. नवीन शाहदरा गीता ट्रस्ट धर्मशाला : नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
27. शिवधाम धर्मशाला : मोहन पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
28. वैश्य अग्रवाल धर्मशाला : मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032
29 उमराव सिंह वैश्य फर्मशाला : गली नत्थन सिंह, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006
30. लाला कन्हैयालाल की धर्मशाला : अहाता केदारा, बाड़ा हिन्दूराव, दिल्ली-110006
31. बड़ी धर्मशाला : मौहल्ला चूड़ीवालान, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
32. छोटी धर्मशाला : मौहल्ला चूड़ीवालान, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
33. धर्मशाला : गली बदलियान, मौहल्ला चूड़ीवालान, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
34. धर्मशाला पहाड़गंजिये : कूंचा पातीराम, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
35. धर्मशाला बेरी वाली, कूंचा पातीराम, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006

राष्ट्रभाषा हिन्दी

(**श्री शिव प्रकाश गुप्त** द्वारा संपादित 'भारतवाणी' से संकलित)

यदि भारत के लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

★

जब तक देश में अंग्रेजी का आधिपत्य है, तब तक स्वतन्त्रता पर जनता का अधिकार अधूरा है।

देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

★

भारतीय भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है, कोई विदेशी भाषा नहीं।

एम० हिदायतुल्ला

★

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी। इस में दो राय नहीं।

पं० जवाहर लाल नेहरू

★

हिन्दी देश की एकता की ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी

★

देश के सबसे बड़े भू भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

सुभाष चन्द्र बोस

★

हिन्दी अपने गुणों से देश की राष्ट्र भाषा है।

लाल बहादुर शास्त्री

★

भारत यदि हिन्दी को भूल गया तो अपनी संस्कृति को भी भूल जाएगा।

ज्ञानी जैल सिंह

कोई कितना भी विरोध करे एक दिन तो देश में सब को हिन्दी स्वीकार करनी ही है।

डॉ० जाकिर हुसैन

□

मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अनादर करता है वह देशभक्त कहलाने लायक नहीं।

महात्मा गांधी

□

जब तक देश का राज काज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज्य है।

मोरारजी देसाई

□

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा तो है, लेकिन हमारे लिए यह बात अधिक महत्व की है कि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है।

शिवसागर रामगुलाम

□

हिन्दी के द्वारा ही देश को एकसूत्र में पिरोया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द

□

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बन्धु हैं।

अरविन्द घोष

□

राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाएं :

- अपना दैनिक कार्य राष्ट्र-भाषा हिन्दी में करें।
- अपना लैटर-पैड तथा विजीटिंग कार्ड हिन्दी में छपवाएं।
- विवाह, मुहूर्त, गृह-प्रवेश यज्ञोपवीत व नामकरण संस्कार तथा अन्य कार्यक्रमों के निमन्त्रण-पत्र हिन्दी में ही छपवाएं।
- अपने प्रतिष्ठान के नामकरण हिन्दी में ही लगाएं।
- अपने प्रतिष्ठान के विज्ञापन हिन्दी में दें और बिलबुक तथा रसीद बुक पर हिन्दी को भी स्थान दें।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ कीजिए।

With
Best Compliments
From

Ved Parkash Bansal

172, VIVEKANAND PURI. DELHI-110007

SUNNY

TIFFIN CARRIER

Manufacturer :

Nav Bharat Industries

A-20, INDUSTRIAL AREA WAZIRPUR,
DELHI-110052

Fact. : 7213582
Resi. : 77 60 79

With Best Compliment

From :

SHRI BHARAT SINGH GOEL

PROPRIETOR

घर में मेल होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।

M/s. Narco Sales Corporation

18, NARAIN MARKET, SADAR BAZAR, DELHI-110006

Phones : Off. : 518883 Resi. : 519168

Sister Concern :

M/s. BHARAT ELECTRICALS

8325, NEW ANAJ MANDI, BARA HINDU RAO, DELHI-110006

Phone : Off. : 772091

M/s. MOHIT HOSIERY FACTORY

5767, Gandhi Market, 1st Floor, Sadar Bazar,
DELHI - 110006

Phone : 779596

ON THE OCCASION OF MAHARAJA AGRASAIN JAYANTI

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

गोल्डन का नाम, शुद्धता का प्रमाण

GOLDEN MASALA CO.

Manufacturers of :
HIGH CLASS AGMARK SPICES

324, Bagh Kare Khan, Kishan Ganj, DELHI-110007

Phones : Offi. : 514623, 517860 Res. : 7127055

Sister Concern :

Molu Ram Suraj Mal

3, GOPAL BHAWAN GALI BATASHAN, KHARI BAOLI, DELHI-110006

Phone : 233334

THE ONE-UP RANGE

of Candy Home Appliances

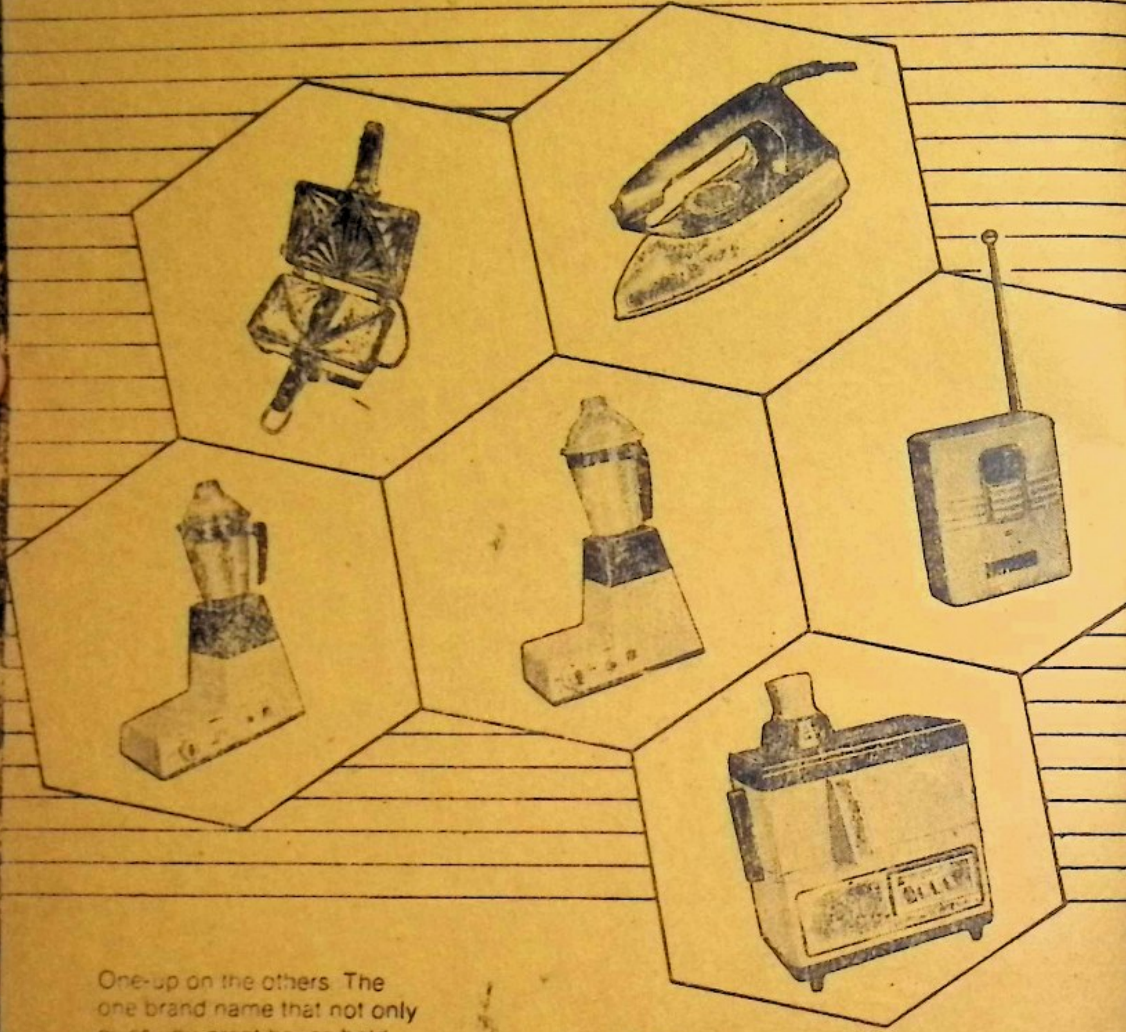

One-up on the others. The one brand name that not only gives you great house hold appliances but also gives you a choice of models in all of them: sandwich makers, electric-irons, food processors, juicers & cordless electric bell

CANDY
HOME APPLIANCES

WESTERN ENGINEERS

11/12 Lalita Block, Shastri Nagar, Delhi-110052 (INDIA)
Phones: 734478, 517956 Tlx: 032-79049 IKI IN — Fax: 352471

अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी (पंजी०)

190, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-110007

उद्देश्य

1. प्रत्येक वैश्य बन्धु में भ्रातृभाव एवम् सहयोग की भावना का विकास करना।

2. वैश्य बन्धुओं को संगठित एवं जागृत करने के साथ-साथ वैश्य समाज से अशिक्षा, रूढिवाद, संकीर्णता तथा कुरीतियों को दूर कर प्रगतिशील समाज बनाकर महाराजा अग्रसेन के आदर्शों को मूर्त रूप प्रदान करना।

3. वैश्य समाज के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, साँस्कृतिक एवं शैक्षणिक विकास हेतु पुस्तकालय, वाचनालय, मन्दिर, धर्मशाला, व्यायामशाला, सांस्कृतिक केन्द्र व शिक्षण संस्था की स्थापना करना एवं प्रबन्ध करना।

4. वैश्य समाज में आरोग्य वर्धक व शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से नि:शुल्क योग साधना केन्द्रों, अस्पतालों की स्थापना करना एवं प्रबन्ध करना।

5. वैश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु वैश्यों में जागृति पैदा करना व दहेज, अशिक्षा, शराब पीना आदि प्रथा को दूर कराने का प्रयास करना।

6. अन्य सभी कार्य करना जो संस्था के उददेश्यों की पूर्ति हेतु उचित, आवश्यक एवं सहयोगात्मक प्रतीत होते हों।

7. 'सभा' की समस्त आय का प्रयोग केवल 'सभा' के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही किया जायगा।

8. 'सभा' राजनीति से सर्वथा निरपेक्ष रहेगी।

With best Compliments
from :

HONSON

SUPER QUALITY

Oil Seals, Rubber & P.V.C. Parts for all Motor Cycles, Scooters & Mopeds

Mfgd. by :

HONSON Auto products (Regd.)

2247/66, Nai Wala Karol Bagh, New Delhi-110005
Phone : Off. : [illegible]81898, 58[illegible]122

Residence :

Sher Jang Hans

215, Vivekanand Puri, Sarai Rohilla, Delhi-110007
Phone : 734839

With best compliments from :

Rajasthan Steel Corporation

Dealers of :
ALL SORTS OF IRON-STEEL ☐ FERRO-ALLOYS ☐ METALS

40/1, Industrial Estate, New Rohtak Road,
NEW DELHI-110005
Phones : Off. : 586782 Resi. : 524058

जिन्दगी का मोड़

कु० कविता गुप्ता
4236, गली बहूजी,
पहाड़ी धीरज, दिल्ली

आज हमारी जिन्दगी किस मोड़ पर आई है,
जहाँ चहुं ओर बस लगती तन्हाई है।

हर आदमी जैसे बस जी रहा है
जिन्दगी को जहर समझ पी रहा है
हर पल जहां जिन्दगी ही से विदाई है
आज हमारी जिन्दगी किस मोड़ पर आई है।

हर बशर को यहाँ दूसरे से गिला है
प्यार करके बस रंजोगम ही मिला है
प्रत्येक निमिष जहां भावों की लड़ाई है
आज हमारी जिन्दगी किस मोड़ पर आई है।

भय जब हमारी नस-नस में समाया है
आतंकवाद क्यों फिर लोगों को भाया है
हर शख्स यहां अब लगता सौदाई है
आज हमारी जिन्दगी किस मोड़ पर आई है।

राम और रहीम आज यहाँ भिन्न हैं
हिन्दू है पूर्व तो मुसलमान पश्चिम हैं
साम्प्रदायिकता अब हर दिशा में छाई है
आज हमारी जिन्दगी किस मोड़ पर आई है।

With Best Compliments from :

B. DAYAL & SONS STATIONERS

Specialists in :
Office Stationery, School & Drawing Materials

5396-9, IInd Floor, New Market, Sadar Bazar,
DELHI-110006

Shop : 739434 Resi. : 776002

The Child is the father of the man.

PARBHATI LAL & SONS

Distributors of :
COPWUD' BRAND KNOBS & HANDLES

Dealers in :
PLS Brand Door & Window Fittings ● All Aluminium Extruded Section ● Iron Chromium Curtain Pipes ● All Types of Brass & Aluminium Building Fittings

Head Office : 3687, CHAWRI BAZAR, DELHI - 110006

Branch Office : 3567, Kucha Daya Ram Chawri Bazar, Delhi-110006

Phones : Office : 26.872, 262079 Residence : 267566

सुमन संचय

1. हमेश मुख से शुभ वचन निकालो, कहीं ऐसा न हो कि यही आपके आखिरी शब्द हों।
2. भलाई करके उसे जताना शोभा नहीं देता।
3. किसी के मुख के सामने उसकी प्रशंसा न करें तथा किसी के पीछे उसकी निन्दा न करें।
4. प्यार की पहली झलक ही अक्ल की आखिरी झलक होती है।
5. गरीब के दरवाजे पर परमात्मा के सिवा कोई नहीं जा सकता।
6. गुनाह छिपा नहीं रहता वह मनुष्य के मुख पर सदैव लिखा रहता है।
7. अन्याय को चुपचाप सह लेना दुष्कर्म है।
8. मौत के बाद सब दुःख खत्म हो जाते हैं।

—अरुण कुमार गुप्ता
म० नं० 119/3, गली न० 3,
ईस्ट मोती बाग, दिल्ली-7

With best compliments from :

Bhagwan Swaroop Jain & Brothers

Wholesale Cloth Marchants

KATRA LEHSWAN, CHANDNI CHOWK, DELHI-110006

Phones : Shop : 2529505 Resi. : 518181

With Best Compliments from :

Gupta Industries

Manufacturers of :

Stove & Petromax,

Pressure Cooker

R-14, GALI NO. 11, ANAND PARBAT INDUSTRIAL AREA,
NEW DELHI-110005

Phones 585948, 521557

Who goes borrowing goes a sorrowing

With best compliments from :

AMIT TRADERS

WHOLESALE CLOTH MERCHANTS

5693, NAI SARAK, DELHI-110006

यदि चाहो तो

1. यदि महान बनना चाहते हो तो — सत्य पथ पर चलो।
2 यदि जीतना चाहते हो तो — स्वयं को जीतो।
3. यदि त्यागना चाहते हो — क्रोध को त्यागो।
4 यदि हसना चाहते हो तो — स्वयं पर हसो।
5. यदि दया करना चाहते हो तो — अपंगो पर करो।
6. यदि कुछ पहनना चाहते हो तो — नेकी का चोला पहनो।
7. यदि कुछ खाना चाहते हो तो — गमो को खाओ।
8. यदि कुछ देखना चाहते हो तो — अपने आप को देखो।
9. यदि चलना चाहते हो तो — अहिंसा पर चलो।
10. यदि मरना चाहते हो तो — वतन पर मरो।

—विष्णु गुप्ता
म० न० 119/3, गली नं० 3,
ईस्ट मोती बाग, दिल्ली-7

With Best Compliments from:

Available at all Leading Shops in 80 C m. & 90 C.M. cut

Matchless Matching Range In Colour & Quality

Sangita (R) & Sarika (R) Blouses

- Two × Two Rubia
- Exclusive Quality Designed Blouse
- H. T. × H. T. Rubia
- Silki Rubia

A Product by :

PARAS COTTON MILLS

Katra Sat Narain Chandni Chowk,
P. O. Box No. 1065 Delhi-110006
Phone : 2926721, 2526785

With best compliments from :

DEEPALI FURNISHINGS

A House of :

Curtain Cloth, Sofa Cloth, Bed Covers, Bed Sheets, Towels, Carpets, Coir, Jute & P. V. C. Floorings

20 & 21, Beadon Pura Ajmal Khan Road, Karol Bagh,
NEW DELHI-110005

Phones : Off : 5720584 Res : 524458, 522702

To accept a favour is to sell one's freedom.

With Best Compliments from :

SHIV EMPORIUM

Specialists in :

Vimal, Gwalior, Raymond's & Dalmia, Jai Bharat Sarees

1500/10, Tota Ram Bazar,
(Near Transformer)
Tri Nagar, DELHI-110035
Phone : 7226416 P.P.

Residence :
50, Vivekanand Puri,
Azad Marg Delhi-110007
Phone : 512467

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti.

With Best
Compliments
from

R. K. Aggarwal
23, Vivekanand Puri, Delhi-110007

AGARWAL GARMENT

Specialists in :
CALCUTTA VARIETIES

735/4, Ashok Gali, Gandhi Nagar, DELHI-110031

Phones : Offi. : 2248410 Resi. : 771856

AGARWAL TRADERS

Specialists in :
LUDHIANA HOSIERY & LUCKNOW KURTA

742/2. ASHOK GALI. GANDHI NAGAR, DELHI-110031

Phones : Off. : 2200880 Resi. : 771856

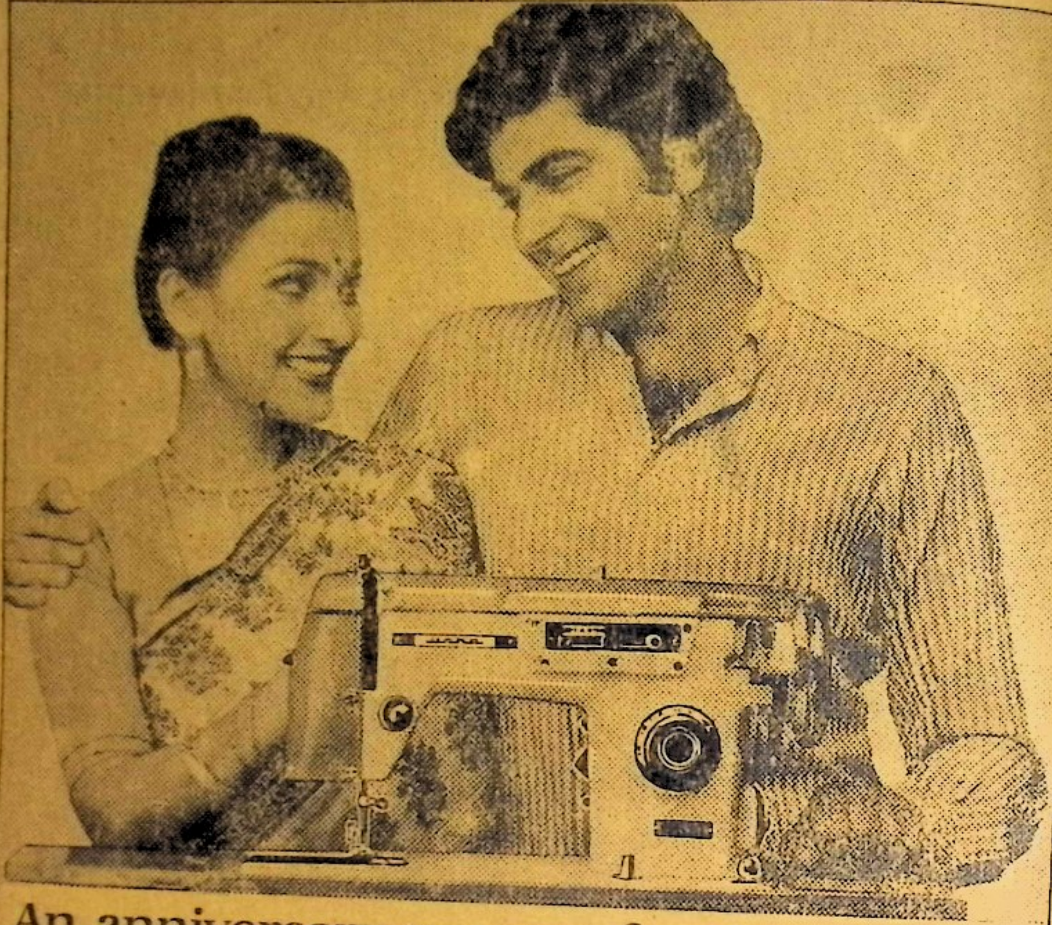

An anniversary present for the years of happiness we've shared together.

Usha is a gift that has given people joy for a lifetime. In India and in over 50 countries all over the world.

That's because Usha is India's finest sewing machine. It utilises the world's best components. For instance, six vital forged steel parts. It's smooth and noiseless. It's the easiest sewing machine to use. It's backed by India's finest after-sales service.

These strengths make Usha India's largest selling sewing machine.

They also make it the ideal gift... for special people.

The only gift that's better is love.

USHA

A tradition of excellence

आज का वैश्य समाज

(शिव प्रकाश गुप्ता एम.ए.)
(महामंत्री : दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन 4235-36, गली बहूजी, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6)

भारतीय मान्यता के अनुसार समाज रचना का मूल आधार वर्ण व्यवस्था है और वैश्य वर्ग इस व्यवस्था का विशिष्ट अंग रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि वैश्य जाति ने सामाजिक जीवन के सभी गुणों का पूर्णरूपेण अपने जीवन में साक्षात्कार किया और इसी कारण विदेशियों के अनेक अत्याचारों के बावजूद भी अपने अस्तित्व को यथावत सुरक्षित रखा। वैश्यों ने न केवल आर्थिक व्यवस्था को भली प्रकार से संचालित किया अपितु धार्मिक सामाजिक एवं शैक्षणिक उन्नयन में दीर्घ काल तक सतत् प्रयत्नशील रहे और अनेक अवसरों पर देश तथा धर्म के लिये बड़े से बड़ा बलिदान करने में अग्रसर रहे। वैश्य समाज इस देश में परम्परा से ही भद्र और सम्पन्न माना जाता रहा है। इसी कारण अतीत में हम "महाजन" कहलाए और हमारे समाज के प्रति आदर की भावना रही।

यह हमारे समाज का प्राचीन गौरव है और हम सब इस पर गर्व कर सकते हैं। परन्तु काल चक्र की गति के कारण हम अपने गौरव को भूल गए हैं। पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में अपने महान अतीत को देख पाने में नितान्त असमर्थ, हम अपने जीवन मूल्यों के प्रति आस्था खोते चले जा रहे हैं। स्थितियां बदलती जा रही हैं। आज देश में हमारे समाज के प्रति सम्मान का भाव नहीं रहा। आज हम "श्रेष्ठ" नहीं रहे। हमारे रीति रिवाज रहन सहन तथा आचार विचार इतने विकृत होते चले जा रहे हैं, कि यदि हमने समय रहते इन्हें सुधारने का प्रयत्न नहीं किया तो सम्भवतः हमारे समाज का भविष्य भी अन्धकारमय हुए बिना नहीं रहेगा।

जहां तक सामाजिक कुरीतियों का प्रश्न है, भारतीय समाज परम्परा-प्रधान है। इसमें कोई बुरी बात भी नहीं। अपनी इन परम्पराओं के कारण ही सदियों तक विदेशियों द्वारा किए अत्याचारों को सहन करने के बाद भी हम अपने अस्तित्व को बनाए रख सके हैं। वैश्य समाज अपनी दान मनोवृत्ति के कारण आज भी सम्मानित हैं। अन्य समाजों की तुलना में वैश्य समाज में परम्पराओं, रूढ़ियों एवं रीति-रिवाजों को अधिक महत्व दिया जाता है। समय के साथ-साथ और कुछ परिस्थितियों के कारण इन परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों में विकार बढ़ते गये। आज ये इतने विकृत हो गये हैं कि इन्हें एकदम सुधारना या इनमें नवीनता लाना असम्भव हो गया है। फिर भी यह अति आवश्यक है कि कुछ अति हानिकारक, दुस्साध्य तथा खर्चीली रीतियों के निवारण हेतु शीघ्रातिशीघ्र ध्यान दिया जाए।

इस श्रेणी में दहेज प्रथा का अभिशाप आज हमारे सामने एक ज्वलन्त प्रश्न के रूप में आता है। अतीत में माता पिता, सम्बन्धियों एवं मित्रों द्वारा स्नेहवश अथवा नई गृहस्थी चलाने की सुविधा प्रदान करने या माता-पिता की सम्पत्ति में से कुछ भाग कन्या को देने के भाव से

विवाह पर कुछ उपहार देने की प्रथा ने आज समाज के लिए एक भयानक अभिशाप का रूप धारण कर लिया है, जिसके कारण गुणकर्म के अनुसार योग्य वर मिलना अत्यन्त कठिन हो गया है। वर पक्ष की ओर से दहेज की माँग आवश्यकताओं की अथवा स्नेह की प्रतीक न रहकर मान मर्यादा का प्रश्न बनता जा रहा है। कन्या पक्ष आज अपने को ऊँचे एवं धनवान घरानों से संबंधित होने की लालसा में अधिक से अधिक दहेज देने का प्रस्ताव स्वयं करता है। धनीवर्ग द्वारा दहेज की राशि में निरन्तर बढ़ोतरी का प्रभाव पड़ता है, निम्न एवं मध्यम वर्गों के लिये पर्याप्त धनराशि जुटाने के प्रयत्न में अपने घर खर्च में कटौती करनी पड़ती है। माता-पिता एवं अन्य परिवार जनों के बुरे स्वास्थ्य, सुकुमार बच्चों को पौष्टिक आहार का अभाव, अनैतिक तथा असामाजिक उपायों से धनोपार्जन के प्रयत्न, ये सब प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से इसी कुप्रथा की देन दीख पड़ते हैं, जो एक के बाद एक वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं को जन्म देते जा रहे हैं।

इस समस्या ने समाज सुधारकों का ध्यान आकर्षित नहीं किया हो, ऐसी बात नहीं है। बहुत सी संस्थाओं ने भी इसके उन्मूलन के लिये प्रयत्न किये हैं, परन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो पाई है। आज के वैयक्तिक जीवन प्रणाली के प्रभाव में लोगों की सामाजिक संस्थाओं एवं इनकी गतिविधियों के प्रति अरूचि उपरोक्त असफलता का एक कारण हो सकती है, परन्तु एकमात्र कारण नहीं। इन प्रयत्नों की असफलता के कारण अन्यत्र भी खोजने होंगे। दहेज प्रथा भारतीय समाज की पुरानी परम्परा है एवं सांस्कृतिक व धार्मिक भावनाओं तथा विरासत के नियमों से जुड़ी हुई है। इस समस्या का निदान इन परम्पराओं एवं भावनाओं को समाप्त करने से नहीं, अपितु इनमें उत्पन्न विकारों के उन्मूलन में खोजना होगा। मैं यह मानता हूं कि दहेज जुटाने में माता पिता को भी असहनीय परेशानी होती है, विवाह से पहले कन्या के दिल को भी उसका अहसास होता है और जो व्यथा उसके दिल को होती है, उसको शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। परन्तु प्राय: देखा जाता है कि वही कन्या विवाह के पश्चात माता की असुविधा को अनदेखा कर अधिक से अधिक सामान व नकदी विभिन्न अवसरों पर अपनी ससुराल ले जाने के लिए केवल लालायित ही नहीं रहती, परन्तु अपना अधिकार समझती है। यह भावना विरासत के नियम से जुड़ी प्रतीत होती है। कानून द्वारा कन्या को पिता की सम्पत्ति में बराबर का अधिकार प्राप्त होने पर भी कन्या अभी इस अधिकार का उपयोग करती नहीं दीखती। बहुत कम मामलों को छोड़कर सम्पत्ति का बंटवारा अभी भी केवल पुत्रों में ही होता रहा है। इसका कारण केवल यह है कि भारतीय समाज में परम्परा का प्रभाव कानून के प्रभाव से बहुत अधिक है। अत: एक वर्ग की यह राय है कि दहेज एवं विवाह के पश्चात विभिन्न अवसरों पर कन्या को माता पिता की ओर से भेंट, कन्या को पैतृक सम्पत्ति में से अधिकृत भाग को देने का रूप है, जिसे देने में माता पिता तथा अन्य परिवार जनों को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। दहेज प्रथा का उन्मूलन कन्या को पैतृक सम्पत्ति में से अपना भाग प्राप्त करने के लिए कानून का सहारा लेने के लिए उत्साहित करेगा और इस प्रकार एक समस्या का निदान मुकदमेबाजी मनमुटाव परस्पर प्रेम का अभाव आदि कई समस्याओं को जन्म देगा। यह मत कहां तक मान्य हो सकता है, इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा। इस संबंध में कुछ कानून बनाए गये हैं, और कानून बनाये जाने की सम्भावना है। इससे देश में जो वातावरण बनेगा वह समस्या के निदान में सहायक होगा, इसमें संदेह नहीं, फिर भी सामाजिक संस्थाओं को यह समझ लेना चाहिये कि इस समस्या का सही हल भारतीय परम्पराओं के भीतर ही मिल सकेगा, बाहर नहीं।

यही बात खुशी एवं गमी के अवसरों पर परिवारजनों, संबंधियों, इष्ट मित्रों आदि को, आमंत्रित करने की प्रथाओं पर लागू होती है। इन अवसरों पर अधिक से अधिक संबंधियों एवं मित्रों का एकत्रित होना भारतीय संस्कृति का एक अंग है और यह परम्परा समाज में भ्रातृत्व, संगठन-सौहार्द तथा आत्मीयता की भावना में सहायक रही है। इन अवसरों पर खर्च कम करने के लिए इस प्रथा को ही समाप्त करना कोई सही कदम नहीं होगा। हाँ, इन व्यक्तियों के आने जाने अथवा जलपान आदि पर अनाप सनाप व्यय का सादगी द्वारा कम करने पर विचार करना अति आवश्यक प्रतीत होता है। इसी प्रकार संबंधियों एवं मित्रों द्वारा भेंट, न्यौता अथवा टीके के रूप में नकद राशि का लेना देना बिलकुल समाप्त करना भारतीय परम्परा एवं संस्कृति के प्रतिकूल होगा। परन्तु इस राशि को न्यूनतम स्तर पर निर्धारित करने से अवश्य ही समाज की भलाई होगी।

भारतीय परम्पराओं से सम्बद्ध कुछ और कुरीतियां आज हमारे समाज में घर कर गई है, जिन्हें एकदम छोड़ा जा सकता है, जैसे बारात जुलूस में अश्लील नृत्य, मद्यपान आदि। वैसे भी इन कुरीतियों ने कुछ ही वर्ष पहले जन्म लिया है और अब ये शैशव काल से अपनी यौवन अवस्था को पहुंच रही है। इनका उन्मूलन करने में अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अपनी सन्तानों को इन कुरीतियों से अवगत कराने और इनके परित्याग के लिये उनको मानसिक रूप से तैयार करना पर्याप्त होगा। परन्तु अगर इन्हें समय रहते कुचला नहीं गया तो इनका उन्मूलन भी अत्यंत कठिन हो जाएगा।

आज समय आ गया है जब सामाजिक संगठनों को आडम्बरपूर्ण आयोजनों को तिलान्जलि देकर उपरोक्त समस्याओं पर गम्भीर रूप से विचार करना और इनके निदान के लिए कुछ ठोस कार्यक्रम अपनाकर उन्हें कार्यान्वित करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। यदि हम दृढ़ प्रतिज्ञ हों और लगन से इस काम में जुट जाएं, तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी और हमारा समाज पुनः समृद्धिशाली और वैभवशाली बन सकेगा।

●

- अग्रवाल समाज की परम्परा उज्जवल रही है।
- अनेक मनीषियों, महापुरुषों तथा विद्वानों ने इस समाज में जन्म लिया है।
- साहित्य, कला, विज्ञान, न्याय, शिक्षा, उद्योग, राजनीति, प्रशासन, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में समाज के बन्धुओं ने नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं।
- उदार दृष्टिकोण, स्नेहिल स्वभाव और विषम से विषम परिस्थितियों में भी अपने आपको 'एडजस्ट' करके चलने में समाज ने ख्याति अर्जित की है।
- देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन से लेकर आधुनिक भारत के निर्माण तक समाज ने प्रमुख भूमिका निभाई हैं।
- अब तन-मन-धन से देश के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध हैं।

हम ऐसे समाज के घटक हैं
यह स्वाभिमान हममें होना चाहिए।

अग्रोहा विकास की योजना

(महावीर प्रसाद, सम्पादक "अग्रोहा धाम")

अग्रोहा के पुनरुत्थान एवं विकास कार्य का शिलान्यास आज से 12 वर्ष पूर्व सितम्बर 1976 को किया गया था। उस दिन से अग्रोहा विकास ट्रस्ट के सतत प्रयासों द्वारा अग्रोहा हरिद्वार की भांति अपने समाज का एक विशाल तीर्थ स्थल बनने की ओर अग्रसर है।

यहां 22 कमरों की आधुनिक सुविधाओं सहित एक सुन्दर धर्मशाला है। इस धर्मशाला में ट्रस्ट का कार्यालय तथा महाराजा अग्रसेन टैक्नीकल इंस्टीच्यूट चल रहा है। महाराजा अग्रसेन टैक्नीकल इंस्टीच्यूट में 120 विद्यार्थी दो वर्षीय फार्मेसी डिप्लोमा कोर्स की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इंस्टीच्यूट के छात्रों के लिए एक छात्रावास है जिसमें 40 विद्यार्थी निवास कर सकते हैं तथा 8 क्वार्टर कर्मचारियों के लिये भी हैं। छात्रावास के छात्रों के लिये एक स्वतन्त्र भोजनालय चल रहा है तथा यात्रियों के लिए ट्रस्ट ने एक अलग भोजनालय का प्रबन्ध किया है।

अग्रोहाधाम के मुख्य द्वार के दोनों ओर हरे भरे घास के मैदान तथा छोटे बड़े वृक्ष व फूल पौधे इस पावन एवं ऐतिहासिक स्थल को बहुत ही रमणीक एवं सुन्दर स्थान बनाए हुए हैं जिससे यह स्थल अपने समाज का ही नहीं अपितु समाज के सभी वर्गों के लिये आकर्षण केन्द्र बनता जा रहा है। महाराजा अग्रसेन की भव्य मूर्ति तथा अपने समाज को कुलदेवी महालक्ष्मी जी की अति सुन्दर, विशाल एवं भव्य मूर्तियां देखते ही बनती हैं।

अग्रोहाधाम परिसर में एक 400'x300' का शक्ति सरोवर, उसके चारों ओर 1700 फुट लंबाई के बरामदे तथ उनके ऊपर पहली मंजिल पर 68 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है जिसमें से 34 कमरे पूर्ण हो चुके है तथा बाकी 34 कमरों में बिजली फिटिंग एवं सीवर लाईन की फिटिंग का कार्य चल रहा है कमरों की छतें लग चुकी हैं। शक्ति सरोवर के अन्दर चारों ओर यात्रियों के स्नान के लिए पौड़ियां बन चुकी हैं। स्वतन्त्र जल एवं मल निष्कासन योजना पूरी हो चुकी है जिस पर पाँच लाख रुपया खर्च आया है।

इसी प्रकार दूसरी मंजिल पर भी ऐसे ही 68 कमरों का निर्माण बाद में और किया जावेगा। महाराजा अग्रसेन तथा कुलदेवी लक्ष्मी जी के मंदिरों के गुंबद निर्माण का तथा एक अन्य तीसरे मंदिर के निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका है। मंदिरों के सामने अति भव्य एवं विशाल यज्ञ मंडप तथा सभागृह बनाया जाना है। आवासीय क्वार्टर तथा कार्यालय भवन का निर्माण भी किया जावेगा। भगवान मारुति की नव्वे फुट ऊँची अति भव्य प्रतिमा का निर्माण शीघ्र ही किया जायेगा। महाराजा अग्रसेन जी के नाम से 270 एकड़ भूमि पर आधुनिकतम मैडिकल कॉलेज एवं 1000

बिस्तरों के हस्पताल का निर्माण कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ हो रहा है। इसका शिलान्यास 21 मई 89 को हरियाणा के मुख्यमंत्री **चौ० देवीलाल जी** ने समारोह पूर्वक किया।

उपरोक्त सभी बातों को तथा कार्यों को दृष्टिगोचर रखते हुए यह पूर्ण विश्वास एवं दृढ़ता से कहा जा सकता है कि अगले कुछ वर्षों में यहां के विकास तथा पुनरुत्थान की गति अत्यधिक तीव्र होगी और अग्रोहा का नाम विश्व के मानचित्र पर अंकित हो जाएगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वर्ष में केवल एक बार 12 घण्टों के लिये अग्रोहा-धाम के वार्षिक मेलों में 5 लाख अग्र बन्धु एकत्रित होकर अपने विशाल समाज के अनुरूप अपनी शक्ति का प्रदर्शन करें, चाहे उसके लिए हमें कितनी भी असुविधा क्यों न उठानी/सहनी पड़े।

With best complments from :

NANU RAM GUPTA
151, Vivekanand Puri, Delhi - 110 007

Mfrs. & Suppliers of :
ISI "Anand" Brand

Electrical Accessories, Switch, Socket, Plug, Holders all types on DGS & D Rate Contract

ANAND ELECTRICAL INDUSTRIES

117, Tulsi Ram Bhawan, Industrial Area, Najafgarh Road, New Delhi - 110 015

Tel. : Factory : 535457, 5431880
Residence : 770724

★ कुछ अपने बारे में ★

(ब्रजभूषण गुप्त, मन्त्री, अग्रवाल सभा, विवेकानन्द पुरी)

बात 1976 की है जबकि सारे देश में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के माध्यम से समस्त अग्रवालों में एक जन जागरण की लहर चल रहो थी उन्हीं दिनों हमारो कालोनी में भी कुछ उत्साही सज्जनों ने, जिनमें स्वर्गीय श्री श्रीगोपाल जी गुप्ता प्रमुख थे महाराजा अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर कुछ आयोजन करने का विचार बनाया। उस दिन कालोनी के अधिकांश अग्रवाल परिवारों को प्रत्येक से दस रुपये लेकर अग्रसेन दरबार का शीशे में मंढा हुआ एक चित्र तथा एक मोमबत्ती का पैकेट दिया गया और रात्रि में ऐसे प्रत्येक घर पर मोमबत्तियाँ जला कर प्रकाश किया गया। रात्रि का यह जगमगाता प्रकाश कालोनी के अग्रवालों में एक नवीन चेतना के रूप में विकसित हुआ फलस्वरूप अग्रवाल सभा के गठन की चर्चा प्रारम्भ हो गई जिस की परिणति 9 अक्टूबर 1977 को विधिवत अग्रवाल सभा के गठन में हुई। सभा के प्रथम प्रधान श्री बिशन दयाल गोयल व मन्त्री श्री ब्रजभूषण गुप्त निर्वाचित हुए जिनके कुशल व अनुभव पूर्ण निर्देशन में सभा निरन्तर सात वर्ष तक उन्नति पथ पर अग्रसर होती हुई दिल्ली की अग्रवाल सभाओं में अपनी एक विशेष छवि बनाने में सफल हुई। प्रथम वर्ष में सभा के 66 सदस्य बने। कालोनी में अभी विकास कार्य चल रहे थे, नए मकान बन रहे थे जिनमें नए नए परिवार आ कर बस रहे थे, साथ साथ सभो से सम्पर्क बढ़ाने का कार्य भी निरन्तर जारी था। प्रथम वर्ष में ही वैश्य संगठन सभा द्वारा संचालित अग्रसेन जयन्ती के जुलूस में हमारी सभा की ओर से दो टैम्पुओं में अनेक स्त्री पुरुष सम्मिलित हुए। दीपावली पर शुभकामनाओं का आदान प्रदान तथा होली मंगल-मिलन का कार्यक्रम रखा गया। इसी वर्ष बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ भी सभा की ओर से दान दिया गया। संगठन को दृष्टि से इसे अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन से सम्बद्ध कर दिया गया जिसका मार्गदर्शन सभा को निरन्तर प्राप्त होता रहता है। सदस्यों के बच्चों के विवाहादि के अवसर पर हलवाई के बरतनों के नजदीक में कहीं न मिलने से कठिनाई अनुभव की गई जिसके निराकरण का श्री गणेश सभा प्रधान श्री बिशन दयाल गोयल ने अपने ट्रस्ट से लगभग पाँच हजार रुपये के बर्तन सभा में भेंट स्वरूप प्रदान कर के किया। फिर तो सभा को बरतन देने की सदस्यों में एक होड़ सी लग गई परिणाम स्वरूप अब आपकी सभा के पास लगभग 40000/- मूल्य के बरतन हैं जिनमें हलवाई के बरतनों के तीन सैट तथा खाने के स्टील के बरतनों के चार सैट हैं। दान दाताओं में सर्व श्री बिशन दयाल गोयल, जौहरी लाल गोयल, श्याम लाल गुप्ता, देवेन्द्र कुमार, कपूर चन्द गोयल, श्यामसुन्दर बंसल, मनमोहन अग्रवाल, ज्ञानीराम, परमानन्द, फूलचन्द गुप्ता, सोहन लाल गोयल, रतन लाल गोयल, ताराचन्द, दौलत राम जिन्दल, रोशन लाल, प्रम चन्द अग्रवाल, सागर मल, बिरखाराम, रामकिशन गुप्ता, आ०पी० गर्ग, सरदारी लाल व दुलो चन्द गुप्ता आदि ने बरतनों के लिए दान देकर सभा के कार्य को स्थायित्व प्रदान करने में अपना योगदान दिया। इसी प्रकार सर्वश्री के०एम० मित्तल व ब्रह्म प्रकाश ने हलवाई के

काम आने वाली एक एक भट्टी सभा को प्रदान की, जिसके लिए उक्त सभी सज्जनों के प्रति में सभा की और से आभार प्रदर्शन करता हूं।

इसी प्रकार आपकी यह सभा आपसी सद्भाव व सहयोग के वातावरण में निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर होती रही। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के आव्हान पर 14-12-80 को अपनी सभा के सदस्यों की एक बस अग्रोहा ले जाई गई। तथा अग्रोहा में प्रथम कुम्भ के अवसर पर 31-10-82 को हमारी सभा की एक वस 55 सदस्यों को लेकर अग्रोहा गई। इस अवसर पर रु० 1100/- सभा की ओर से अग्रोहा विकास ट्रस्ट को भेंट किए गए। प्रति वर्ष अग्रसेन जयन्ती होली, दीपावली आदि उत्सवों के अतिरिक्त समय-समय पर सभा द्वारा यात्रा भ्रमण एवं पिकनिक आदि कार्यक्रम भी रखे गये जिनमें बड़खल भील, सोहना, मथुरा, वृन्दावन, गिरराज जी, हरिद्वार तथा नेपाल यात्रा का भी आयोजन किया गया। इस प्रकार के कार्यक्रमों से मनोरंजन व ज्ञानवर्धन के साथ-साथ परस्पर मेलजोल व सहयोग की भावना को भी काफी बल मिला।

मार्च 1986 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का अधिवेशन तालकटोरा स्टेडियम नई दिल्ली में रखा गया जिसके आयोजन व प्रबन्धादि का कार्य दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन ने अपने जुम्मे लिया। हमारी सभा के सभी सदस्यों ने इस सम्मेलन के कार्य में भरपूर सहयोग दिया साथ ही लगभग 8000/- का आर्थिक सहयोग भी स्वागत समिति के सदस्य व विज्ञापनों के रूप में दिया गया। इसी प्रकार अभी पिछले दिनों अप्रैल 89 में तालकटोरा स्टेडियम में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की विवाह समिति की ओर से विवाह योग्य, युवक युवतियों का परिचय सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन में भी हमारी सभा का पूरा सहयोग रहा।

यह सभा जहां संगठन, सहयोग व कार्य की दृष्टि से दिल्ली की सभाओं में अपना विशेष स्थान रखती है वहां समाज से कुरीति निवारण कार्यों में भी पीछे नहीं है। समय समय पर विचार गोष्ठियों द्वारा समाज सुधार एवं कुरीति निवारण संबंधी कार्यों के महत्व पर प्रकाश डाल कर सदस्यों में इन कार्यों के प्रति चेतना जागृत की गई। प्ररिणामस्वरूप सभा के कई सदस्यों तथा सर्वश्री ब्रजभूषण गुप्त, ओम नारायण गुप्ता ने अपने सुपुत्रों एवं श्री मांगे लाल रुस्तगी ने अपने भाई का विवाह बिना बाजे व बिना बारात का जलूस निकाले सम्पन्न किया। उन के इस कार्य को समाज के सभी क्षेत्रों में सराहा गया। इसी प्रकार सभा के कई अन्य सदस्यों ने भी अपने पुत्रों की बारात में भाँगड़ा नाच एवं मद्यपान नहीं होने दिया। सभा द्वारा एक प्रस्ताव पास करके कालोनी में लड़की के विवाह में कालोनी निवासियों से लड़की वाले के यहां भोजन न करने की प्रार्थना की गई इस प्रस्ताव का कालोनी में काफी अच्छा प्रभाव रहा।

इस सभा के कार्यकर्त्ता वैश्य समाज संबंधी कार्यों में सभी संस्थाओं से तालमेल रखने में विश्वास रखते हैं अतः उनके उत्सवों, समारोहों पर बराबर सम्मिलित होते हैं तथा उन्हें अपने समारोहों में भो आमन्त्रित करते रहते हैं। मुझे यह कहते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि अख़िल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन व दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं दिल्ली के नेताओं की हमारी सभा पर प्रारम्भ से ही विशेष कृपादृष्टि रही है। यही कारण है कि सर्वश्री बनारसी दास गुप्त, रामेश्वर दास गुप्त, प्रदीप मित्तल, रतनलाल गर्ग, देव कुमार जैन, शिव प्रकाश गुप्त, विष्णु चन्द्र गुप्त, राम कुमार गुप्ता, निरंजन लाल गौतम, ग्यासी राम गुप्ता, सांसद श्री जय

प्रकाश अग्रवाल, निगम पार्षद सर्वश्री सत्यनारायण बंसल, श्री मंगत राम सिहल, महेश चन्द शर्मा, नन्द किशोर गग, नरसिंह दास गुप्ता, ओम प्रकाश कौशिक व कार्यकारी पार्षद श्री बंसी लाल चौहान प्रभृति नेता हमारे समारोहों में समय समय पर पधार कर हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं। दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन में हमारी सभा के श्री बिशन दयाल गोयल उपाध्यक्ष व श्री ब्रजभूषण गुप्त क्षेत्रीय सहसंयोजक के पद पर कार्यरत हैं।

बच्चों के क्षेत्र में भी हमारी सभा प्रतिवर्ष महाराजा अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर अपनी कक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले छात्रों को प्रोत्साहन के रूप में पारितोषिक प्रदान करती है, जिससे विद्यार्थियों के उत्साह एवं मनोबल में वृद्धि होती है। इसी प्रकार असहाय विधवा की पुत्री के विवाह पर तथा समाज के निर्धन व्यक्तियों की भी समय समय यथाशक्ति आर्थिक सहायता करने की व्यवस्था भी करती रहती है।

सदस्यता के क्षेत्र में भी हमारी सभा निरन्तर प्रगति कर रही है आज हमारी सदस्य संख्या 225 तक पहुंच चुकी है। विवेकानन्दपुरी एवं पूर्वी मोती बाग निवासी प्रत्येक वैश्य परिवार का कम से कम एक व्यक्ति हमारी सभा का सदस्य है, कई परिवारों के तो एक से अधिक सज्जन हमारे सदस्य हैं। अक्तूबर 1985 में सभा का पंजीकरण रजिस्ट्रेशन आफ सोसायटीज एक्ट के अन्तर्गत करा लिया गया है जिसका रजिस्ट्रशन नं S. 16107 दिनांक 18-10-85 है।

बारह वर्ष के अपने इस काल में हमारी सभा ने आशातीत उन्नति की है इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु करने को अभी अनेकों कार्य शेष हैं। विशेष रूप से सभा के पास अपने निजी स्थान की कमी समय समय पर बहुत खटकती है। इस सम्बन्ध में सभा के प्रयत्नों से एक अलग संस्था 'वैश्य पंचायती ट्रस्ट' के नाम से रजिस्टर करा ली गई है जिसके माध्यम से डी०डी०ए० से इस संबंध में पत्र व्यवहार चल रहा है। जातिगत संस्थाओं का कार्य विशेष रूप से अपने सदस्यों तथा बिरादरी में आपसी तालमेल रखते हुए एक दूसरे के दुःख सुख में सम्मिलित होकर समाज में एकत्व की भावना बनाए रखना है। हमारी सभा इस कार्य में भी काफी सक्रिय है। समय व परिस्थिति को देखते हुए समाज में संगठन की अत्यन्त आवश्यकता है साथ ही विवाहादि अवसरों पर अनावश्यक खर्चों को कम करके अवसर एवं समय के अनुरूप यथार्थवादी रुख अपनाने की भी नितान्त आवश्यकता है। मुझे पूर्ण आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि वैश्य समाज, जिसे राष्ट्र की आर्थिक धुरी कहा जाता है, अपने संगठन व कार्य के बल पर पुनः अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करेगा तथा महाराजा अग्रसेन की निर्मल कीर्ति में चार चाँद लगाएगा।

महाराजा अग्रसेन बावड़ी

यह बावड़ी नई दिल्ली में 2, हैलो रोड पर बहुत ही प्राचीन रूप में स्थित है। पुरातत्व विभाग की पुस्तिका में इस बावड़ी का निर्माण महाराजा अग्रसेन द्वारा किया गया, दर्शाया गया है। इस स्मारक को सुन्दर बनाने के लिए सरकार से प्रयास जारी हैं। वैश्य इन्टरनेशनल परिवार दिल्ली द्वारा गत दो वर्षों से अग्रसेन जयन्ती पर राजघाट से बावड़ी तक पदयात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

With Best Compliments From :

PowerWin NEW PHONE 773497

RANGE WITH IS 1293 ISI IS 3854 MARK

ELECTRICAL ACCESSORIES

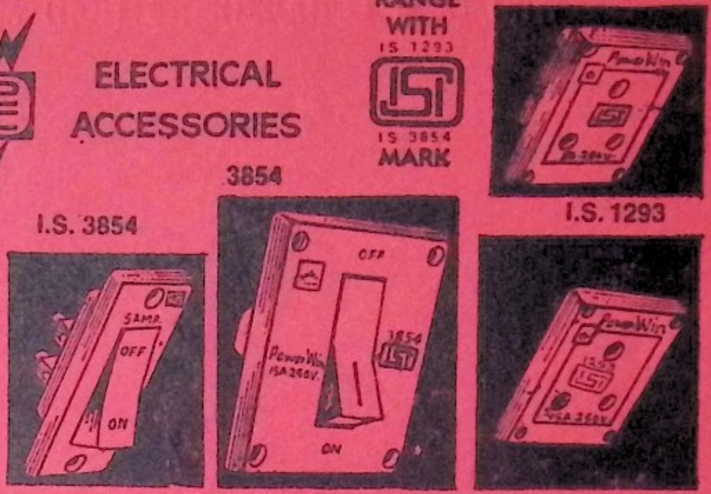

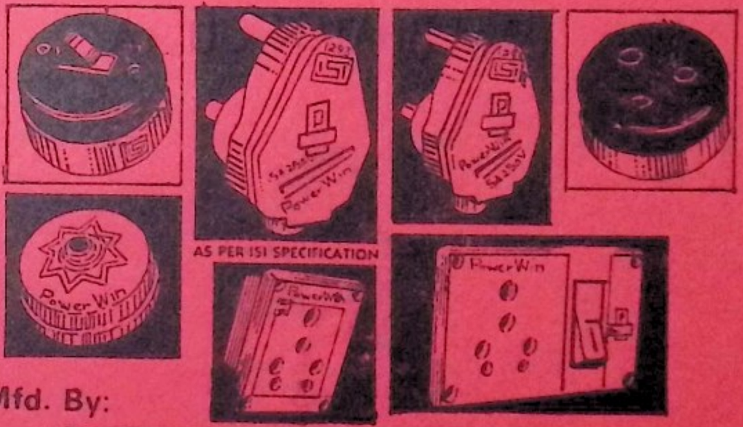

Mfd. By:

DEEPAK ELECTRIC CO. DELHI-7

ON D.G.S. & D APPROVED LIST & RATE CONTRACT

13 VIVEKANAND PURI, DELHI-110007

For any enquiry please contact :

AVTAR ELECTRICALS

BHAGIRATH PALACE, DELHI-110006

Phones : Off. : 231211, 232121 Resi. : 7117474

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With best compliments from :

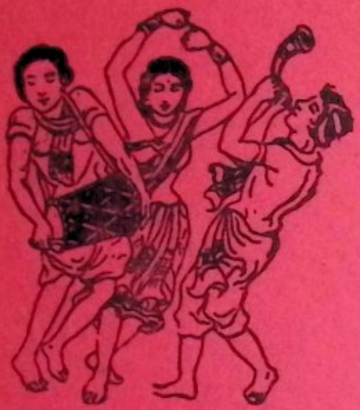

RAM BHAJAN GUPTA

R. B. & SONS

D.C.M. WHOLESALE STOCKISTS

CINEMA ROAD, BHIWANI (HARYANA)

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With Best Compliments From :-

CEAT TYRES OF INDIA LTD.

GLASS FIBRE DIVISION

505, New Delhi House,
27, Barakhamba Road,
NEW DELHI - 110 001

Manufacturers of :

DECA Fibre Glass Yarn, Chopped Strand Mat, Chopped Strand, Roving and Woven Roving

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With best compliments from :

ELECTRIC CABLE INDUSTRIES

ALIPUR GARHI, DELHI-110036

Manufacturers of :

ISI Marked

IS : 694

IS:1554 IS:1596

IS:5950

DGMS Approved
Approved by :- DGS & D
Railways, Defence,
Shipyards, Electricity Boards,
Fire Insurance Certified.

High Quality PVC Insulated & PVC Sheathed Copper & Aluminium Conductor Wires & Cables

Stockists :

M. R. Sales Corporation

4C-1541, Bhagirath Palace, DELHI-110006

R. P. Electricals

5C-1541, Bhagirath Palace, DELHI-110006

Phones : Fact. : 2281061 Resi. : 777038
" Sales Off. : 2519843, 233191, 239477, 2914296

अभिनन्दन !

—कविराज मौजी राम शर्मा 'मस्त'
45, विवेकानन्द पुरी,
दिल्ली-110007

गण राज्य आग्रेय के संस्थापक, वैश्य जनपद के जनक उन्नायक।
जयन्ती के इस शुभ अवसर पर, स्वीकार करो यह अभिनन्दन ॥

कौशल और लगन से तुम ने, दुनिया एक नयी रच डाली,
जिसके आँगन आँगन में अब, नाच रही मनहर खुशहाली।
अग्र-वंश को चमन कहूं तो, तुम थे कुशल पारखी माली,
महा लक्ष्मी की कृपा कोर से, लहक रही पग-पग हरियाली।

राज्य परिवार का गर्ग गोत्र था, सतरह गोत्र गण प्रतिनिधियों के।
मैं श्रद्धा-पुष्प चढ़ाने आया, ग्रहण करो ये शब्द सुमन ॥
...... स्वीकार करो यह अभिनन्दन ॥

कौरवों के शासन काल में, अग्र गण-राज्य बहुत उन्नत था,
अन्य गणों के साथ कर्ण ने, इस गण को भी जीत लिया था।
राज्य-तन्त्र ने प्रजातन्त्र से, अद्भुत सा गठजोड़ किया था,
व्यापार जगत के जीवन ने भी एक नया ही मोड़ लिया था।

बुद्धि, परिश्रम, पूंजी का वह संगम सुखद त्रिवेणी जैसा,
हे महामना, महाराज, नमन लो, तुम को सौ-सौ बार नमन।
...... स्वीकार करो यह अभिनन्दन ॥

निर्धन को एक ईंट, एक मुद्रा, देने की थी प्रथा चलाई,
गुरु-मन्त्र यह भूल गये सब, बोलो किसे दोष दें भाई।
अब उन राहों पर चलना है, रहबर ने जो राह बताई,
रखनी है प्रज्वलित ज्योति वह, यत्नों से जो गई जगाई।

दहेज जैसी बिषधर नागिन को, वश में कर ले जन समाज ये,
कुछ ऐसी प्रेरणा दो सबको, हे जीवन धन, अन्याय-दलन।
.... स्वीकार करो यह अभिनन्दन ॥

अग्रसेन जयन्ती समारोह (उपस्थित जन समूह का एक दृश्य)

With best compliments from :

R. M. Auto Centre

Manufacturers & Dealers of

Scooters, M. Cycles, Mopeds Parts & Accessories

1728/56-57, NAIWALA, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

Phones : Off. : 5732012   Res. : 521476, 519568

Prop. : MUKESH GOEL

❋

RAKESH KUMAR GOEL

GOVT. CONTRACTOR & SUPPLIER

Office :
241, Vivekanand Puri,
Sarai Rohilla, Delhi-7

Residence :
101, Vivekanand Puri,
Sarai Rohilla, Delhi-7

Phone : 519568, 521476

सभा के बर्तनों की सूची तथा नियम

1. हलवाई के बर्तन — तीन सैट

प्रत्येक सैट में :—

भगोने,	ढक्कन,	कूंड,	परात,	बाल्टी,	जग,	ट्रे,	टब
8	8	2	4	4	4	15	1

2. खाने के स्टील के बर्तन—

—100 प्लेट वाले - तीन सैट

प्रत्येक सैट में :—

फुल प्लेट,	हलवा प्लेट,	गिलास,	राइस प्लेट,	डोंगे,	सर्विस स्पून
100	50	50	5	15	15
राइस स्पून,	चम्मच				
5	100+50				

—50 प्लेट वाले - दो सैट

प्रत्येक सैट में :—

फुल प्लेट,	हलवा प्लेट,	गिलास,	राइस प्लेट,	डोंगे,	सर्विस स्पून
50	25	25	3	8	8
राइस स्पून,	चम्मच				
3	50+25				

3. गैस भट्टी — 2

-: नियम :-

(1) सभा के बर्तन अधिक से अधिक एक मास पूर्व बुक किये जायेंगे।

(2) बर्तनों के लिए प्रार्थना पत्र स्वीकृत होने पर प्रति सैट रु० 200/- (दो सौ रुपये) धरोहर राशि तथा निश्चित शुल्क प्रार्थना पत्र की स्वीकृति के 24 घन्टे के अन्दर सभा के कोषाध्यक्ष के पास जमा करा कर रसीद प्राप्त कर लेनी चाहिए। धरोहर राशि बर्तन ठीक हालत में तथा नियत समय तक वापिस आने पर वापिस कर दी जायगी।

(3) बर्तन सराय रोहेला क्षेत्र से बाहर के लिए नहीं दिये जायेंगे।

(4) सभा के बर्तन 3 दिन से अधिक के लिए नहीं दिये जायेंगे।

(5) बर्तन भली प्रकार संभाल कर लेने चाहिए। कोई भी बर्तन टूट जाने अथवा गुम हो जाने की स्थिति में सभा को उसी प्रकार के नए बर्तन का मूल्य देना होगा।

(6) बर्तनों को नियत स्थान से लेना तथा वहीं वापिस रखना होगा।

(7) वापसी पर बर्तन पूरी तरह साफ होने चाहिए। ऐसा न होने पर धरोहर राशि से रु० 25/- (पच्चीस रुपये) काट लिए जायेंगे।

(8) सभा के बर्तनों में मांस, मछली, अण्डा आदि रखना व पकाना वर्जित है।

(9) बर्तनों के लिए प्राप्त किसी भी प्रार्थना पत्र को सभा बिना कारण बताए अस्वीकार कर सकती है।

नोट :— बर्तनों के लेने व देने का समय प्रति दिन प्रातः 7 बजे से 8 बजे तक होगा।

अग्रसेन जयन्ती 1987
मंच पर :- सर्वश्री पदम सिंह जैन, सोहन लाल गोयल, दया चन्द्र गुप्त, रामेश्वर दयाल गर्ग, बिरखा राम गुप्ता, राम किशन गुप्ता व श्री विष्णु चन्द्र ।

With Best Compliments From :

Khandelwal Construction Co.

Approved Government Contractor & General Order Suppliers

63,4204, Rehgar Pura, Karol Bagh, New Delhi-110005

Office : 17, Guru Nanak Market, Karol Bagh, New Delhi-110005

Phones : 582382. 584780

अग्रवाल विभूतियां जिनके सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किए

नाम	डाक टिकट जारी करने की तिथि	मूल्य
लाला लाजपत राय (जन्म 28-1-1865 अवसान 16-11-1928)	28 जनवरी 1965	15 पैसे
डा० भगवान दास (जन्म 12-1-1869 अवसान 18-9-1958)	12 जनवरी 1969	20 पैसे
सेठ जमना लाल बजाज (जन्म 4-11-1889 अवसान 11-2-1942)	4 नवम्बर 1970	20 पैसे
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (जन्म 9-9-1850 अवसान 5-1-1885)	9 सितम्बर 1976	25 पैसे
महाराजा अग्रसेन	24 सितम्बर 1976	25 पैसे
सर गंगा राम (जन्म 13-4-1851 अवसान 10-7-1927)	10 जुलाई 1977	25 पैसे
श्री राम मनोहर लोहिया (जन्म 23-3-1910 अवसान 12-10-1967)	12 अक्टूबर 1977	25 पैसे
श्री मैथिली शरण गुप्त (जन्म 3-8-1886 अवसान 12-12-1964)	3 अगस्त 1974	25 पैसे

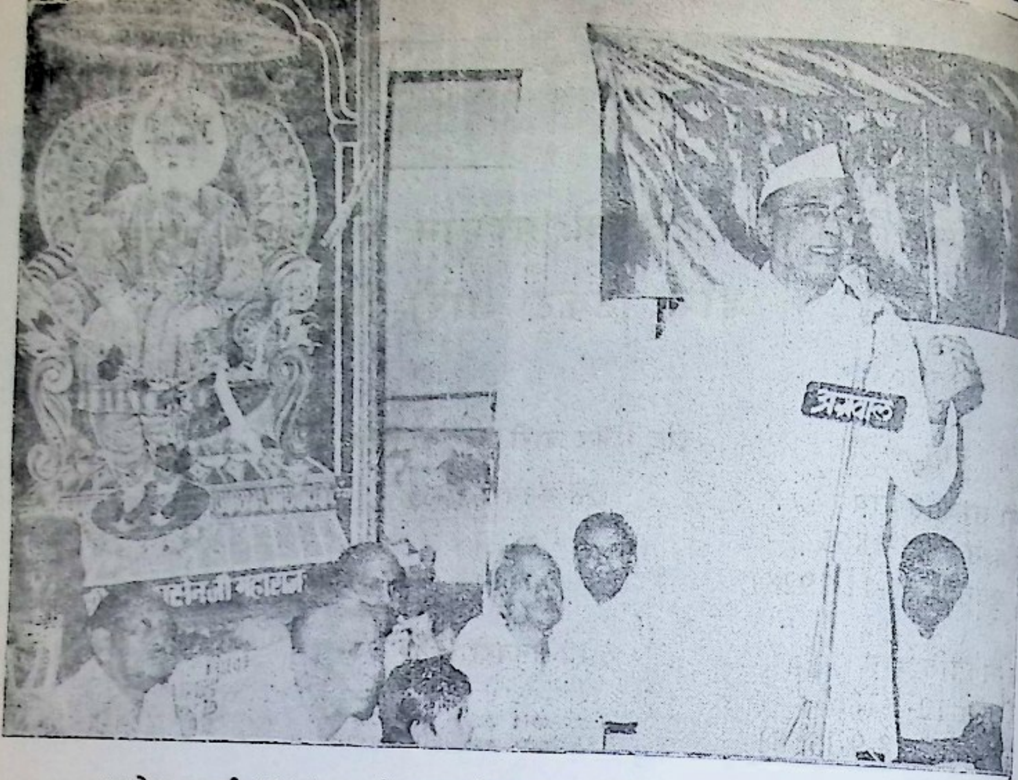

अग्रसेन जयन्ती 1986 पर श्री बनारसी दास गुप्त सभा को सम्बोधित करते हुए
मंच पर बैठे हुए :- सर्व श्री प्रदीप मित्तल, सोहन लाल गोयल, ब्रज भूषण गुप्त,
मांगे लाल रुस्तगी, राम कुमार गुप्ता व भगवत स्वरुप ।

With Best
Compliments
from

UMED BROS.

GOVT. GONTRACTOR & ENGINEERS

1/258, NAI BASTI, BAHADUR GARH (HARYANA)

Phone : 83-668

सूक्ति-कण

(संकलित)

1. किसी महान व्यक्ति के अनुयायी प्राय: अपनी आंखें बन्द रखते हैं ताकि वे उसका गुणगान अधिक अच्छी रीति से कर सकें। **—नीत्शे**

2. संसार में सबसे शक्तिशाली मनुष्य वही है जो नितान्त अकेला खड़ा रहता है। **—इब्सन**

3. जो तेरे साथ अन्याय करे उसे क्षमा कर दे, जो तुझे अपने से अलग कर दे, तू उसके साथ मेल कर, जो तेरे साथ बुराई करे तू उसके साथ भलाई कर और सदा सच्ची बात कह, चाहे वह तेरे ही विरुद्ध क्यों न जाती हो। **—अज्ञात**

4. दुनिया में लोगों के तीन वर्ग हैं—एक तो वे जो अपने अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे बुद्धिमान हैं। दूसरे वे जो दूसरों के अनुभवों से सीखते हैं, वे सुखी हैं। तीसरे वे जो न अपने अनुभवों से सीखते हैं, न दूसरों के, वे बेवकूफ हैं। **—चेस्टर फील्ड**

5. हम जितनी ही जल्दी लोगों की भावनाओं का अनुमान लगा सके उतना ही दुनिया की भलाई के लिए अच्छा होगा। **—सर्व पल्ली राधाकृष्णन**

6. बहुत-सी चीजों के 'अधूरे ज्ञान' से 'अज्ञान' कहीं अधिक बेहतर है। **—नीत्शे**

7. अपनी योग्यता को सहेज कर रखना चाहिए। मात्र प्रदर्शन के लिए उसका उपयोग करना मूर्खता है। समय आने पर ही उसका उपयोग करना बुद्धिमता हैं। **—चेस्टर फील्ड**

8. योद्धा वह है जो संघर्ष की चाट रखता है परन्तु हार-जीत से उचाट रहता है। **—अज्ञात**

9. दो काली वस्तुओं से एक सफेद वस्तु नहीं बनती। निन्दा का जवाब निन्दा से, गाली का जवाब गाली से या हिंसा का जवाब हिंसा से देने से जगत् में दोष की ही वृद्धि होती है। **—अज्ञात**

10 कोयल दिव्य आम्ररस पीकर भी गर्व नहीं करती, परन्तु मेंढक कीचड़ का पानी पीकर ही टर्राने लगता है। **—प्रसंग रत्नावली**

11. कनक की चमक में लीन प्राणी को मन की सच्चाई का ज्ञान कम रहता है, विश्व के प्रांगण में अहिंसा और दया ही ऐसी वस्तुएं हैं जिनसे मनुष्य मात्र का कल्याण सम्भव है। **—यादवेन्द्र नाथ शर्मा 'चन्द्र'**

12. प्यार और प्रतिशोध दो भिन्न बातें हैं, जहां प्यार है वहां प्रतिशोध नहीं, जहां प्रतिशोध हो वहां प्यार नहीं। **—यादवेन्द्र नाथ शर्मा 'चन्द्र'**

13. मैं उन पुरुषों को पसन्द करता हूं जिसका भविष्य उज्जवल हो और उन महिलाओं को पसन्द करता हूं जिनका अतीत उज्जवल हो। **—'आस्कर'**

14. जो कोई किसी को गुलाब का फूल देता है, थोड़ी-सी खुशबू उसके हाथों में भी लगी रह जाती हैं। **—चाइनीज उक्ति**

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti.

With Best Compliments from ;

PHUL CHAND GUPTA

GUPTA INVESTMENT & FINANCIAL CONSULTANTS

(Stock, Share Dealers and Investment Consultants)

64, Vivekanand Puri, Sarai Rohilla, DELHI-110007

Phone : 511735

Contact for :

- Sale/Purchase of equity shares.
- Forms for all new issues (Spot incentive available on selected issues).
- Fixed deposits in reputed companies (very attractive incentive given).
- L.I.C. Policies.

With best Compliments from :

NARESH OPTICS

Leading Importers & Suppliers of :

PHOTOCHROMATICS ROUGH BLANKS & LENSES

267, Kandle Kashan Street, 1st Floor, Fatehpuri, DELHI-110006

Phones : Shop : 2512440, 2525662 Res. 736567

Cables : ENOPTICS, DELHI-110006

Associates :

Naresh Enterprises

DISTRIBUTORS OF RESILENS PLASTICS LENSES

(A Product of Tata)

महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर

शुभकामनाएं

पैसा बहुत कुछ कर सकता है, परन्तु प्रेम सब कुछ कर सकता है।

—तुर्कोंच कहावत

पुनीत वायर इन्डस्ट्रीज

9361, गऊशाला रोड, किशन गंज,
दिल्ली - 110006

फैक्ट्री : 779839
घर : 734349

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

JAS PAL SINGH (PALA)

GOLD MEDALIST IN TOP QUALITY

PAUL

ALUMINIUM DOOR FITTINGS

PAUL TRADERS

11355, F.F. IDGAH ROAD, NEW DELHI-110055

Phones : Fact. : 517364, 528396 Shop : 730114
,, Resi. : 5415012, 5413491

Stockist : (MAHAVIR ALUMINIUM LTD.)

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With best compliments from :

Rajdhani Paper Distributors

938, Ist Floor, Chhatta Shahji, Chawri Bazar,
DELHI-110006

Phones : Off. : 265845 Res. : 271169

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With best compliments from :

Indian Roadways Corporation

846, Joshi Road, Karol Bagh,
New Delhi-110005

Phones : 513763. 528244, 528217

पाश्चात्य सभ्यता का बढ़ता (कु) प्रभाव

(ब्रजभूषण गुप्त, 190, विवेकानन्दपुरी दिल्ली-7)

संस्कृत भाषा का एक प्रसिद्ध श्लोक है–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशावग्र जन्मना ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन प्रथिव्या सर्वमानवाः ।।

अर्थात इस देश भारत में उत्पन्न अग्रजन्मा ब्राह्मणों के चरित्रों से पृथ्वी के समस्त मानवों ने शिक्षा ग्रहण की। कहां तो यह स्थिति और कहां आज की हालत कि हमें अपने देश की कोई भी चीज चाहे भाषा हो या भूषा, रहन सहन हो या खान पान, शिक्षा हो या दीक्षा प्रत्येक क्षेत्र में पाश्चात्य अर्थात इंग्लिश-अमरीकन प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। आज का भारतीय जितना अंग्रेज बनता जा रहा है स्वतन्त्रता से पूर्व अंग्रेजों के शासनकाल में इसका एक प्रतिशत भी नहीं था। गाँधी जी के स्वदेशी आन्दोलन ने देशवासियों में अपने देश की वस्तुओं के प्रति जो आत्मीयता व स्वाभिमान जाग्रत किया था आज उसका एकदम उलट हो गया है। फौरेन Foreign की ऐसी ललक हममें पैदा हो चुकी है कि हम प्रत्येक भारतीय वस्तु को हेय दृष्टि से देखने लगे हैं।

यह ललक यदि वस्तुओं तक ही सीमित रहती तो भी खैर थी किन्तु आज तो हम इस बहाव में इतने बह चुके हैं कि अपने माता-पिता को माता-पिता कहना पिछड़ेपन की निशानी मानने लगे हैं, इसकी जगह मम्मी-डैडी ने ले ली है। बच्चों को बेटा या मुन्ना के स्थान पर बाबा (जो हमारी भाषा में पितामह को कहा जाता है) और पत्नी को श्रीमती या देवी जी के स्थान पर डार्लिंग या मैडम कहने में शान समझते हैं। मामा, चाचा, ताऊ, भुआ, फूफा जैसे संबंध कारक स्पष्ट रिश्तों के लिए एक शब्द अंकल व आण्टी तथा जीजा व साले के लिए एक ही शब्द ब्रदर इन लॉ (Brother in law) धड़ल्ले से प्रयोग किये जा रहे हैं। इसी प्रकार अभिवादन में नमस्ते, राम-राम, जय श्री कृष्ण जैसे सुन्दर शब्दों का स्थान हलो या हॉय ले चुके हैं।

हमारे संस्कारों का हाल तो और भी बुरा है। जन्मदिन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करने के स्थान पर प्रज्वलित मोमबत्तियाँ बुझाते हैं (जो हमारे यहाँ अपशकुन माना जाता है) कथा, कीर्तन व हवन के स्थान पर मौड संगीत पर हैपी बर्थ डे टू यू की धुन में नाचते हैं। इससे बच्चे के कोमल मन पर प्रारम्भ से ही यूरोपीय संस्कार अपना प्रभाव जमाने लगते हैं, बड़ों से सम्मान प्रदर्शनार्थ नमस्ते करना अथवा उनके पैर छूना आज जंगलीपन हो गया है। अन्य संस्कारों में विवाह और अन्त्येष्टि के अलावा और किसी का संभवतः हम नाम भी नहीं जानते।

शिक्षा के क्षेत्र में तो पब्लिक स्कूलों ने भारतीयता की पहचान ही समाप्त करने का मानो ठेका ले लिया है। इन स्कूलों के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थी योरोपीय वेष में गर्मी के मौसम में भी टाई व

बैल्ट लगाए अपने वजन से अधिक अपने बस्ते का बोझ उठाए तथा पानी की बोतल लिए प्रातः सात बजे से स्कूल बस की प्रतीक्षा करते आपको हर स्थान पर मिल जाएंगे। इनसे यदि आप सोमवार मंगलवार अथवा 25-26 कहें तो यह नहीं समझेंगे अलबत्ता Monday, Tuesday व Twenty five-Twenty six कहें तभी आप की बात समझ सकगे। भला हो 'स्वराज्य' का जो हमें वास्तव में सब पिछली सदियों को भुलाकर इक्कीसवीं सदी में ले जाकर ही छोड़ेगा।

खान-पान के विषय में जितना कम कहा जाय, ठीक है। जहाँ चौके अथवा रसोई को साक्षात पवित्रता समझा जाता था वहाँ आज जूतों समेत घुस जाना आधुनिकता माना जाता है। दुःख तो यह है कि हमारी कुछ अनपढ़ व रूढ़िवादी कही जाने वाली बूढ़ी माताओं को छोड़कर आजकल की शिक्षित आधुनिकाएं स्वयं भी चप्पल पहन कर रसोई में खाना बनाती हैं और उन्हें इसमें कोई दोष नजर नहीं आता। भारतीय परम्परा के अनुसार बैठा कर पत्तल-सकोरों में आत्मीयता के साथ भोजन करना अब कहीं देहातों में भी दिखाई नहीं देता। जूते पहनें हुए खड़े-खड़े बुफे सिस्टम से स्वयं लेना, स्वयं खाना और बतियाना आम रिवाज बन चुका है। वह कप, प्लेट, गिलास न ढँग से साफ होते हैं न हो सकते हैं, कारण-खाने की जितनी जल्दी है उससे अधिक जल्दी जाने की है। बाजार में पहले जहाँ चाट पकौड़ी पत्तों या दौने में खाकर उसे फैंक देते थे अब सब जगह प्लास्टिक की प्लेट आ गई हैं जिन्हें खाने के बाद केवल सादा पानी में डाल कर निकाल लिया जाता है। दूध वालों के यहाँ भी मटकनों का स्थान गिलास ले चुके हैं। स्वच्छता व सफाई का कहाँ वह भारतीय आदर्श कि पत्तल, दौनों व मटकनों में खाया और फेंक दिया और कहाँ आधुनिकता का यह आलम कि झूठे हाथों से ही खाते जाते हैं और लेते भी जाते हैं, प्लेट व गिलास सादा पानी में डालकर निकाले और साफ हो गए। ऐसी सफाई व फैशन का भगवान ही मालिक है।

वास्तव में हमें अंग्रेजी सभ्यता में रँगने का असली श्रेय हमारी फिल्मों तथा टेलीविजन को जाता है। जहाँ भारतीयता के नाम पर कुछ भारतीय त्यौहारों की कुछ झांकियाँ, आदिवासी नृत्य संगीत व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शास्त्रीय नृत्य व नाटिकाएं आदि के अतिरिक्त कुछ भी भारतीय नहीं होता। यह चीजें एक आवश्यक बुराई (Necessary evil) का रूप ले चुकी है जिनसे छुटकारा भी संभव नहीं। महलों से लेकर गरीब की झौंपड़ी तक इनका निर्बाध प्रवेश है। आज स्थिति यह है कि हम भारतीय इक्कीसवीं सदी में पहुंचते पहुंचते अपनी पहचान भूल चुके होंगे और लार्ड मैकाले का वह स्वप्न कि "यदि किसी जाति या राष्ट्र को समाप्त करना हो तो उस की भाषा व संस्कृति को समाप्त कर दो" हम स्वयं अपने आचरणों से साकार कर देंगे।

❖

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

—राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त

आओ कुछ जानें

(संकलन : शुभ्रा गुप्ता, VII B, दयानन्द मॉडल स्कूल)

तीन देव	: ब्रह्मा, विष्णु, महेश—माता, पिता आचार्य
तीन शरीर	: स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर
तीन गुण	: सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण
चार वेद	: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
चार उपवेद	: स्थापत्यवेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, आयुर्वेद
चार वर्ण	: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
चार आश्रम	: ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम
चार धाम	: बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम, द्वारिका
चार पुरुषार्थ	: (पुरुषार्थ चतुष्ट्य) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
पंच महायज्ञ	: ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, वलिवैश्वदेव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ
पांच यम	: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह
पांच नियम	: शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान
पांच तत्व	: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश
पांच कन्या	: अहिल्या, मन्दोदरी, तारा, कुन्ती, द्रौपदी
छः शास्त्र	: सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक
छः वेदाङ्ग	: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष
छः ऋतु	: वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर
सप्त ऋषि	: वशिष्ठ, अत्रि, कश्यप, जमदग्नि, विश्वामित्र, भारद्वाज, गौतम
सप्त आवरण	: जल, पवन, अग्नि, आकाश, अहंकार, महत्तत्व, प्रकृति
आठ वसु	: अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा, नक्षत्र

आठ दिक्पाल	:	इन्द्र, यम, वरूण, कुबेर, अग्नि, राक्षस, वायु, शिव
नव ग्रह	:	सोम, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि, राहू, केतू
दस इन्द्रियाँ	:	5 ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, कान, नाक, वाक्, त्वचा 5 कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पांव, मुख, गुदा, उपस्थ
दश प्राण	:	प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय
दश दिशा	:	पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, नैऋत्य, वायव्य, आग्नेय, ऊपर, नीचे
ग्यारह रुद्र	:	दश प्राण एवं जीवात्मा
बारह आदित्य	:	चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन
चौदह विद्या	:	ब्रह्म ज्ञान, रसायन, श्रुतिकथा, वैदिक, ज्योतिष, व्याकरण, धनुर, तैराकी, गंधर्व, नाटक, घुड़सवारी, कोक, चोरी, चतुरता
सोलह संस्कार	:	गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकरण, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास, अन्त्येष्टि
अठारह पुराण	:	ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिंग-पुराण, वाराह पुराण, स्कन्द पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण

●

हमें ऐसा क्यों कहते हैं?

अग्रवाल :—	सदा आगे आकर कार्य करने के कारण, अग्रोहे का होने के कारण
बनिया :—	वनज (व्यापार) करने के कारण
सेठ (श्रेष्ठ) :—	अपने अच्छे आचरणों के कारण, समाज में सर्वोच्च स्थान के कारण
महाजन :—	जनों के महान कार्य करने के कारण
वैश्य :—	प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश के कारण
गुप्त :—	व्यापारिक गूढ़ता के कारण
शाहजी :—	साहूकार होने के कारण

★ उत्सव और व्रत ★

भारतीय समाज उत्सव धर्मी है। रोज कोई न कोई पर्व उत्सव होता है और कहीं न कहीं मेला लगता है। इन उत्सव मेलों में व्यक्ति का उल्लास सामूहिक रूप से अभिव्यक्त होता हैं। उल्लास जब उमड़ता है तो वह एकाकी नहीं रह जाता, अपने आसपास के लोगों में बंटता ही बंटता है। वह रोके से भी नहीं रुकता। वस्तुतः जो बांटा नहीं जा सकता वह उल्लास होता ही नहीं जैसे जो व्याप्त न हो जाए और अपने संपर्क में आने वाले वातावरण को झटका न दे, वह सुगन्ध नहीं होती। उल्लास ऐसी सुगन्ध है, जो जितनी व्याप्त होती है उतनी ही और बढ़ती है। कदाचित भारतीय समाज इसीलिए जीवित और जागृत रूप में कायम है कि वह बुरे से बुरे दिनों में भी उल्लास बांटना या उत्सव मनाना नहीं भूला। उल्लास का एक अवसर गया नहीं कि दूसरा आ गया और इस तरह एक धारा अनवरत बहती रहती है और समाज को अपने से सरासोर करती चलती है।

ऐसा नहीं है कि भारतीय समाज सिर्फ उत्सव धर्मी ही हो। वह व्रत धर्मी भी है। व्रत का अर्थ है मर्यादा जितने उत्सव हैं उतने ही अथवा उनसे भी ज्यादा वृत पर्व है। व्रत पर्व उत्सवों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं और जानकार लोगों ने इसकी फल श्रुति यह बताई है कि उल्लासित रहते हुए भी भारतीय समाज ने अपना आपा कभी नहीं खोया। हंसी खुशी के क्षणों में व्यक्ति के अमर्यादित होने की ज्यादा संभावना रहती है और माना है कि व्रतशील व्यक्ति उल्लास के भरपूर क्षणों में बहते हुए भी कुल किनारे नहीं तोड़ता। क्योंकि उसके लिए उल्लास और मर्यादा अलग-अलग चीजें नहीं हैं।

—जनसत्ता से साभार

★

अग्रवाल जाति के बारे में गाँधी जी द्वारा जमनालाल जी को प्रेषित पत्र

□ काकनाडा, शनिश्चर

भाई जमनालाल जी,

अग्रवाल भाईयों को मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान को जो कौम कुछ बलिदान दे सकती है, हिन्दुस्तान की और स्वधर्म की रक्षा कर सकती है, मेरी उम्मीद है इस समय अग्रवाल जाति स्वराज्य की महान जंग में अपना पूरा हिस्सा दे देगी। मैं जानता हूं कि मारवाड़ी कौम में धन हैं धर्मप्रेम है, दान देने का भाव है, आधुनिक पद्धति दी, आत्मबुद्धि की और धर्मरक्षा की है। इसमें अग्रवाल भाई को बलिदान देने की शक्ति देवें, ऐसी मैं प्रार्थना करता हूं।

आपका

मोहनदास गांधी

★ तीन शिक्षाएं ★

(संकलित)

झुक कर चलती

लाल रेशमी सुहाग के जोड़े में लिपटी व गहनों से लदी लाडली बिटिया पहली बार ससुराल से मायके आई। सखी सहेलियों और पड़ौसिनों के चले जाने पर जब गहमागहमी समाप्त हो गई तो माँ, पिताजी, भैया, भाभी व बहन उसे घेर कर बैठ गए।

"तेरी सास कैसी है बेटी?"

माँ ने ही चर्चा छेड़ी और सब उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे।

"बड़ी बुरी है माँ! रा. दिन बिना बात बड़बड़ करती रहती है।" बेटी ने उत्तर दिया।

"और ससुर?" माँ ने व्यग्रता से पूछना चाहा।

बेटी ने अधूरे प्रश्न का ही उत्तर दिया "पूछ मत माँ! वह भी बहुत बुरा है। वहाँ सभी ऐसे हैं यहाँ तक कि .....उसने आह भर के कहा "उनका दरवाजा है न वह भी बड़ा बुरा है। मैं अन्दर बाहर आती जाती हूं, तो बार-बार मेरे सर से टकराता है।"

बेटी की आँखों में आँसू भरे थे और सब चुपचाप बैठे एक दूसरे का मुंह ताक रहे थे। तभी दूर बैठी अनुभवी दादी माँ का स्वर सुनाई दिया—

"बेटी थोड़ा झुक कर चली होती।"

ओह! कितना सरल उपाय? वास्तव में यदि बेटी थोड़ा झुककर चली होती तो क्या ऐसा होता ?

नीचे चलो

सैकड़ों पहाड़ी नाले-नदियों में और सैकड़ों नदियाँ सागर में इस लिए खो जाती हैं क्योंकि नदियाँ अपने को नालों से नीचा रखती हैं और सागर नदियों से नीचे रहते हैं। इस प्रकार नदियाँ पहाड़ी नालों पर और सागर नदियों पर शासन करने में समर्थ होते हैं।

इसलिए जो महात्मा सर्वसाधारण से ऊपर होना चाहता है वह अपने को उनके नीचे रखता है। और जो उनके आगे होना चाहता है वह अपने को उनके पीछे रखता है।

बोझ

पथरीला, संकरा रास्ता था और खड़ी चढ़ाई, एक साधु उस मार्ग से तीर्थ यात्रा को जा रहा

था । सामान के नाम पर उसके पास केवल एक चिमटा और कमण्डल ही था । किन्तु चढ़ाई के कारण वह उसी में पसीना पसीना हो रहा था ।

कुछ आगे चलकर उसे एक 11-12 वष की पहाड़ी वालिका दिखाई पड़ी जो पीठ पर एक हृष्टपुष्ट चार पाँच वर्ष के वालक को लिए हुए थी । वह वालिका बच्चे को संभाले हुए फुरती से चढ़ाई चढ़ रही थी । साधु ने आश्चर्य से देखते हुए उससे पूछा, बेटी, इतना बोझ उठा कर तुम कैसे चढ़ लेती हो, मैं तो इसी में हांफ गया हूं । वालिका ने आँखें तरेर कर साधु की ओर देखा और बोली, वावा बोझ तो आपने उठाया हुआ है, मेरा तो यह भाई है ।

★ १०० वर्ष तक जीने का उपाय ★

1) खुली और हवादार जगह में यथा सम्भव अधिक समय व्यतीत करें ।
2) संध्या के अनन्तर शीघ्र ही शय्या ग्रहण करें और प्रातः जल्दी उठें ।
3) कम से कम छः घण्टे और अधिक से अधिक साढ़े सात घण्टे सोएं । रात्री को कमरे में रोशनी न हो किन्तु खिड़की खुली रहें ।
4) चाय व कॉफी न पीयें । शराब व धूम्रपान बिलकुल त्याग दें ।
5) दिन में दो बार से अधिक भोजन न करें ।
6) ताजे पानी से प्रतिदिन स्नान करें ।
7) मोटे वस्त्र पहनें ।
8) सप्ताह में एक दिन छुट्टी अवश्य मनाएं, उस दिन शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क को भी आराम दें ।
9) काम-क्रोध की उत्तेजना से सर्वथा बचें ।
10) विवाह करें किन्तु संयम नियम का पालन आवश्यक है ।

★

प्रसिद्ध समुद्री पुरातत्वविद् श्री ए०आर० राव ने

श्रीकृष्ण की द्वारका खोज निकाली

बेंगलूर, 8 फर.। अरब महासागर में चल रही द्वारका की खोज के दौरान पत्थर की विशाल इमारतें तथा कई अन्य अवशेष मिले हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसमें से एक इमारत का महाभारत काल में समाकक्ष के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

खोज के दौरान तीन छेद वाले कई लंगर मिले जो ठीक उसी प्रकार के हैं जो ईसा पूर्व 13वीं और 14वीं शताब्दी में सीरिया तथा साइप्रस में उपयोग में लाये जाते थे। खोज के दौरान हिन्दू देवताओं की प्रतिमायें भी मिली हैं।

राष्ट्रीय समुद्री विज्ञान संस्थान के प्रसिद्ध समुद्री पुराविद् ए०आर० राव ने यूनीवार्ता को बताया कि समुद्रीतल में मिली इमारतों में से एक नौ मीटर लम्बी है तथा इसमें कुछ दीवारें भी हैं। इसका सभा रूप में इस्तेमाल किया जाता होगा।

श्री राव ने कहा कि प्राप्त प्रमाणों से पता चलता है कि ईसा पूर्व 1500 में पानी में समा जाने के बाद 1000 वर्ष तक द्वारका नगरी उजड़ी रही। अवशेषों से पता चलता है कि बाद में यह नगरी बन्दरगाह के रूप में एक बार फिर बसी।

उन्होंने बताया कि शंख लिए हुए विष्णु की मूर्ति तथा काले पत्थर की एक अन्य मूर्ति मिलो है जिसका ऊपरी हिस्सा गायब है। इसके साथ में एक हाथी बना हुआ है जिससे लगता है कि ये मूर्तियां लक्ष्मी की हो सकती हैं।

उन्होंने कहा कि पानी में गोमती नदी के बायें किनारे पर पहली बार खोज का कार्य किया गया। इससे पहले छः बार खोज का कार्य दाहिने किनारे पर किया गया था। अध्ययन से पता चलता है कि द्वारका नगरी गोमती नदी के दोनों ओर फैली हुई थी। किले के दो बुर्ज नदी के बायें किनारे पर तथा दो बुर्ज दाहिने किनारे पर थे।

डा० राव ने कहा कि गोमती नदी की गोद से पता चलता है कि इसमें बहुत अधिक पानी रहता था–ऐसा बहुत अधिक वर्षा होने से हो सकता है। पिछले 3500 वर्ष में समुद्रतल 12 मीटर ऊपर हो गया है।

नदी के दोनों किनारों पर मकान बने हुए थे। बंदरगाह में बड़े जहाजों को लाने की सुविधा थी जिन्हें रोकने के लिए लगभग 250 किलोग्राम वजन के लंगरों की जरूरत होगी। ऐतिहासिक काल में बंदरगाह समुद्रनारायण (मंदिर) के निकट था जहां लोहे के कड़े चट्टानों में फंसे देखे जा सकते हैं।

उन्होंने बताया कि शंखधारा के पूर्वी किनारे और मध्य तट में हुई खोज के दौरान प्राग् ऐतिहासिक काल के बर्तन मिले हैं। प्रमाणों से इस बात की पुष्टि हो गई है कि शंखधारा बंदरगाह नगरी थी।

डा० राव ने कहा कि समुद्र के गर्भ में डूबी नगरी का वलापु के निकट के इलाके का खुदाई का कार्य अत्यन्त जटिल है क्योंकि वहां की गाद अत्यधिक चिपचिपी है और बहाव बहुत तेज है। उन्होंने कहा कि अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएं इस क्षेत्र में मिल सकतो हैं।

उन्होंने कहा कि पहली बार तीन युवा पुरातत्वविदों और एक फोटोग्राफर को गहरे समुद्र में गोताखोरी और पानी के अन्दर खोज का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

उन्होंने खेद व्यक्त किया कि फैलोशिप दिए जाने के बावजूद मुश्किल से कुछ युवा पुरातत्व विदों ने इस प्रशिक्षण में रुचि दिखाई है।

(हिन्दू चेतना से साभार)

मेरी व्यथा

मैं महाराजा अग्रसेन का वंशज
कुछ कहना चाहता हूं, कुछ करना चाहता हूं।
मैं महाराजा अग्रसेन का वंशज
कुछ देखना चाहता हूं, कुछ सुनना चाहता हूं।
पर, कुछ कर नहीं सकता मैं
क्योंकि ………………
मेरी जुबान अकड़ गई है,
मेरी कर्मभूमि भी बदल गई है।
मेरी दृष्टि तो बहुत पहले ही लुप्त हो गई थी,
अब श्रवण शक्ति भी सो गई है।
अकड़ी जुबान से यदि कुछ निकलेगा
तो बोल अस्पष्ट ही होंगे।
बदली कर्मभूमि में कुछ होगा,
तो वह शूल ही तो होंगे।
जब दृष्टि ही लुप्त हो जाय
तो फिर खो गया सवेरा है
और जब श्रवण शक्ति भी सो जाय
तो फिर अंधेरा ही अंधेरा है।
इसलिए ………
मैं चाह कर भी
न कुछ कह पाता हूं, न कर पाता हूं,
न देख पाता हूं, और न सुन पाता हूं।
क्या यहीं सब सिखाया था महाराजा अग्रसेन ने।
क्या यही सब चाहा था महाराजा अग्रसेन ने॥
कि—

बदले समय के साथ तुम भी बदल जाओगे
एक रुपये और एक ईंट के सिद्धान्त को भी भूल जाओगे
और भूल जाओगे उस समाजवाद को जो—
अग्रसेन जी ने दिया था।
तुम भूल जाओगे उस जन्मभूमि को
जिस पर अग्रवाल वंश जिया था
भूल जाओगे उस प्रेम को
जो अग्रोहा ने हमें दिया था।
शायद
हम यह सब बातें, सब सिद्धान्त भूल गये हैं
तभी तो हम एक दूसरे के दुश्मन हो गये हैं
पर क्या···
कभी यह समय भी बदलेगा।
कभी कभी समाज अग्रसेन जी के दिखाये
मार्ग पर चल सकेगा।
गर हम हिम्मत और लगन से
मेहनत ओर सूझबूझ से चलने के लिए
हो जायें तैयार
तो यह तय है कि हो जायेगा
हम सब का बेड़ा पार
और तब शायद मैं कुछ कह पाऊंगा
और महाराजा अग्रसेन का समाजवाद देख पाऊंगा।

—माया प्रकाश गुप्ता
63, विवेकानन्द पुरी
दिल्ली-110007

❋ 'मेरी वृत्तियाँ खराब हैं' इसमें खराब वृत्तियों की अपेक्षा मन को अपना मानना ज्यादा दोष है।

❋ जब तक संसार-शरीर का आश्रय सर्वथा नहीं मिट जाता, तबतक जीने की आशा, मरने का भय, करने का राग और पीने का लालच-ये चारों नहीं मिट सकते।

अग्रवाल जाति की प्राचीनता

(शोध परक लेख)

डा० स्वराज्यमणी अग्रवाल

महाभारत पढ़ते-पढ़ते एकाएक एक विचार आया। प्राचीन भारत में परीक्षित ने 35 वर्ष तथा जन्मेजय ने 85 वर्ष राज्य किया। जनमेजय ने अपने राज्यकाल में दो राजसूय यज्ञ किए, जिसका अर्थ हुआ कि युधिष्ठिर की तरह वह भी चक्रवर्ती सम्राट कहलाया। उसके राजसूय यज्ञ में आग्रेणगण का उल्लेख नहीं है अत: जनमेजय के काल में महाराजा अग्रसेन का अभ्युदय नहीं हुआ था। यह एक निश्चित प्रमाण है जिसको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। महाभारत युद्ध के पश्चात् हस्तिनापुर में 16 पीढ़ी तक पांडव के वंशज राज्य करते रहे, किंतु फिर कोई राजसूय यज्ञ न कर सका। भारत वर्ष की इतनी अधिक जन हानि हो चुकी थी कि यहां शासन करने योग्य, प्रजा ही नहीं बची थी।

भागवत में आया है कि श्रीकृष्ण के इस पृथ्वी से चले जाने के बाद अनिरुद्ध के बेटे बज्र ने मथुरा का शासन संभाला। एक बार परीक्षित जब उनसे मिलने आये तो वह बेहद उदास बैठे दिखे। परीक्षित ने पूछा कि तुम्हारी उदासी का कारण क्या है ? तब वज्रनाभ ने बताया कि मथुरा एकदम सूनी पड़ी है शासन किस पर करूं। तब परीक्षित ने उन्हें वृंदावन पर ध्यान देने का उपदेश दिया। वृंदावन एकदम उजाड़ और जंगल हो गया था। बज्रनाभ ने उनकी सफाई करवायी और जहां-जहां भी श्रीकृष्ण ने लीला की थी उन स्थानों पर भगवान कृष्ण की मूर्ति की स्थापना की। परीक्षित ने अन्य स्थानों से जन समूह लाकर मथुरा में जनवृद्धि की, तब कहां जाकर बज्रनाभ मथुरा में शासन कर सका।

यह कथा बहुत कुछ "उरू चरितम्" की कथा से मिलती है, किंतु किसी कथा से किसी कथा का साम्य होना ही उसका इतिहास नहीं बन जाता। जब तक "उरू चरितम्" की कथा का प्रमाणित रूप इस कथा से जोड़ा नहीं जाता, तब तक हम "उरू चरितम्" को अलग ही काव्य मानते रहेंगे।

उरू चरितम् की कथा भी इसी काल से सम्बन्धित हो सकती है। कलि प्रारंभ के 125 वर्ष निकाल दें तो (35 वर्ष परीक्षित राज्य के और 85 वर्ष जनमेजय के शासन काल के) उसी के बाद महाराजा अग्रसेन का अवतरण तथा शासन काल माना जा सकता है। यही समय ऐसा था जब शासन राज्य छिन्न-भिन्न हो गए थे और देश में छोटे-छोटे गणराज्यों का अभ्युदय हो चुका था। इस दिशा में ध्यान देने योग्य और मानने योग्य सबसे बड़ा प्रमाण यह कि बासुकि नाग वंश इसी काल में था और बासुकि नाग के वंश में ही महाराजा अग्रसेन का विवाह हुआ था। कलि के प्रारम्भ के 125 वर्ष बाद भारतवर्ष में नागवंश के बासुकि तथा शेष नाग वंश के शासन काल का प्रमाण उपलब्ध है।

इस दिशा में एक बात और भी विचारणीय है कि अग्रोहा के टीले की खुदाई में 1918 में ही यह प्रमाणित हो चुका था कि आग्रेयगण ई० पू० 200 तक इस धरती पर विद्यमान था किसी नगरी के बसने 100 वर्ष का समय अनुमानित कर लें तो यह नगरी ई० पू० 300 वर्ष पूर्व तक बस चुकी थी। अग्रोहा

की वर्तमान खुदाई में प्राप्त प्रमाणों से यह निश्चय हो चुका है कि महाभारत काल के बाद यह नगर बसाया गया था। उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर महाराजा अग्रसेन का काल कलि के प्रारम्भ से 125 वर्ष बाद मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

वैसे तो चंद्रवंश की परम्परा में अग्रसेन शूरसेन नाम के दो राजाओं को अग्रसेन शूरसेन नहीं कह सकते। उनका जीवन चरित्र हमारे अग्रसेन से एकदम भिन्न है और महाराजा अग्रसेन सूर्यवंशी थे अतः ये कल्पना भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं बन सकती।

केवल नाम साम्य के आधार पर हम किसी भी राजा को महाराजा अग्रसेन नहीं बना सकते। आजकल महाराजा अग्रसेन के बारे में तरह-तरह की भ्रान्तियां फैलाई जा रही हैं। आगरे के कोई सज्जन उन्हें रंगपट्टम मैसूर का बना रहे हैं कोई पंढण का, जबकि अग्रोहा की धरती की प्राचीनता अग्रसेन के काल का सर्वाधिक सशक्त प्रमाण है।

श्रीनाथ के पुत्र दिवाकर का जैन ग्रन्थों में उल्लेख उनकी प्राचीनता का सशक्त प्रमाण है।

महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के पूर्व पुरुष थे। जिन्होंने अग्रवाल जाति को एक नया समाज, नई दिशा प्रदान की। भारतीय संस्कृति की सुरक्षा में उनका अद्भुत योगदान रहा। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के द्वारा उन्होंने भारत के तत्कालीन डगमगाते राज्यों को शक्ति प्रदान की। यह उनकी ही सूझबूझ का परिणाम था कि यह अग्रवाल जाति अपने जन्मकाल से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक अग्रोहा में अपना वर्चस्व बनाए रख सकी। इतनें हजार वर्ष तक अपनी धरती अपने राज्य में बने रहना कोई मामूली बात नहीं है। भारतवर्ष के इतिहास में न जाने कितने राजा हुए और चले गए। जाने कितनी जातियां पैदा हुई और काल के गर्भ में विलीन हो गई किन्तु यह अग्रवाल जाति ग्यारहवीं सदी तक अपने देश में अपनी धरती की रक्षा में जुटी रही। यह कम गौरव की बात नहीं है।

ग्यारहवीं सदी के बाद महमूद गजनी तथा गोरी के आक्रमणों से तहसनहस होकर जब अग्रोहा राज्य समाप्त हुआ तभी यह जाति अपन राज्य को त्याग अन्य नगरों में जा बसी। यही कारण है कि ग्यारहवीं शताब्दी के बाद से "अग्रोहा वालों" के साथ "अग्रवाल" शब्द जुड़ा जो कि आज भी गौरव, संयम और परोपकार का प्रतीक माना जाता है। अग्रसेन जयन्ती के इस पुण्य पर्व पर हम सब मिलकर पुनः एकत्र हों और इस देश में अपने पुराने गौरव को प्राप्त करें। यही हमारा संकल्प हो। तभी हम अग्रोहा और अग्रसेन के ऋण को चुकाने में समर्थ होंगे।

बातचीत की कटुता इन चार शब्दों से काफी कम हो सकती है—'मुझे सही नहीं मालूम'

जो बदला लेने की सोचता है वह अपने जख्मों को हरे बनाये रखता है।

आदमी के पास क्या है यह इतना महत्वपूर्ण नहीं जितना यह कि वह क्या है।

अग्रवालों के प्रचलित गोत्र

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा मान्य

अग्रवालों में 18 गोत्रों का बड़ा महत्व है। प्रत्येक संस्कार के समय, विशेषतया वैवाहिक अवसरों पर, गोत्रों का उच्चारण आवश्यक माना जाता है क्योंकि अग्रवाल समाज में सगोत्र विवाह वर्जित है। इसलिए प्रत्येक अग्रवाल को अपने-अपने गोत्र की जानकारी होना आवश्यक है। किन्तु स्थान, काल या शिक्षा के अभाव से अग्रवालों के ये 18 गोत्र उच्चारण की दृष्टि से विकृत हो गए और उनके अनेक रुप बन गए हैं। स्थान-स्थान में उनके उच्चारण तथा लेखन में भिन्नता पाई जाती है। अतः गोत्रों के सभी रूपों का मंथन करके जो सूची प्रचलित गोत्रों की तैयार की गई है, और जिसे अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन ने मान्य किया है, उसे सर्व साधारण की जानकारी की लिए प्रकाशित किया जा रहा है।

1.	गर्ग	Garg	10 ऐरन	Airan
2.	गोयल	Goyal	11. धारण	Dharan
3.	गोयन	Goyan	12. मधुकल	Madhukal
4.	बंसल	Bansal	13. बिन्दल	Bindal
5.	कंसल	Kansal	14. मित्तल	Mittal
6.	सिंहल	Singhal	15. तायल	Tayal
7.	मंगल	Mangal	16. भन्दल	Bhandal
8.	जिंदल	Jindal	17. नागल	Nagal
9.	तिंगल	Tingal	18. कुच्छल	Kuchhal

टिप्पणी : 1. हमारे यहां गंगल बन्धु भी हैं। यह शब्द गोयन गोत्र का ही दुसरा गोत्र है। सम्मेलन ने इसे भी मान्यता दी है।

2. अग्रवाल शब्द को अंग्रेजी में विभिन्न रूपों में लिखा जाता है। सम्मेलन ने Agrawal रूप को मान्यता प्रदान की है।

अग्रवाल सभा

भूतपूर्व

वर्ष	प्रधान	उपप्रधान
संवत् 2034 वि॰ (1977-78)	श्री बिशन दयाल गोयल 231, विवेकानन्द पुरी	श्री मुतसद्दी लाल 141, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2035 वि॰ (1978-79)	,,	,,
संवत् 2036 वि॰ (1989/80)	,,	,,
संवत् 2037 वि॰ (1980/81)	,,	श्री रोशन लाल 159, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2038 वि॰ (1981/82)	,,	,,
संवत् 2039 वि॰ (1982/83)	,,	श्री मुतसद्दी लाल 141, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2040 वि॰ (1983/84)	श्री ज्ञानी राम 42, विवेकानन्द पुरी	श्री बिशन दयाल गोयल 231, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2041 वि॰ (1984/85)	श्री सोहन लाल गोयल 208, विवेकानन्द पुरी	श्री पूर्ण चन्द्र गुप्त 66, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2042 वि॰ (1985/86)	,,	श्री बिरखा राम गुप्ता 160, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2043 वि॰ (1986/87)	श्री बिशन दयाल गोयल 231, विवेकानन्द पुरी	,,
संवत् 2044 वि॰ (1987/88)	श्री सोहन लाल गोयल 208, विवेकानन्द पुरी	श्री राम किशन गुप्ता 124, विवेकानन्द पुरी
संवत् 2045 वि॰ (1988/89)	श्री रोशन लाल जिन्दल 159, विवेकानन्द पुरी	श्री रामेश्वर दयाल गर्ग 119/3, पूर्वी मोती बाग

विवेकानन्द पुरी, दिल्ली

पदाधिकारी

मंत्री	उपमंत्री	कोषाध्यक्ष
श्री ब्रजभूषण गुप्त 190, विवेकानन्द पुरी	श्री दयाचन्द गुप्त 166, विवेकानन्द पुरी	श्री जौहरी लाल गोयल 156, विवेकानन्द पुरी
,,	,,	श्री पूर्ण चन्द्र गुप्त 66, विवेकानन्द पुरी
,,	,,	,,
,,	श्री वेद प्रकाश बंसल 172, विवेकानन्द पुरी	श्री जौहरी लाल गोयल 156, विवेकानन्द पुरी
,,	श्री मांगे लाल रुस्तगी 194, विवेकानन्द पुरी	,,
,,	,,	श्री दया चन्द गुप्त 166, विवेकानन्द पुरी
,,	श्री भगवत स्वरूप 147, विवेकानन्द पुरी	श्री जौहरी लाल गोयल 156, विवेकानन्द पुरी
,,	,,	श्री दीन दयाल 14, विवेकानन्द पुरी
श्री पूर्ण चन्द्र गुप्त 66 विवेकानन्द पुरी	श्री पदम सिंह गुप्त 130/1, पूर्वी मोती बाग	,,
श्री ब्रजभूषण गुप्त 190, विवेकानन्द पुरी	श्री रामेश्वर दयाल गर्ग 119/3, पूर्वी मोती बाग	श्री रतन लाल गोयल 41, विवेकानन्द पुरी
श्री दया चन्द गुप्त 166, विवेकानन्द पुरी	,,	,,
श्री प्रहलाद राय गर्ग 35, विवेकानन्द पुरी	श्री किशोरी लाल 111, विवेकानन्द पुरी	श्री सूरज भान गुप्ता 56, विवेकानन्द पुरी

महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर शुभकामनाएं

रामानन्द गोयल

145, विवेकानन्द पुरी,
दिल्ली-110007

आलसी को दान देना अपराध है।

S. G. AGGARWAL & CO.

Wholesale Dealers of :

HARDWARE DOOR FITTINGS, IRON CHAINS & ALUMINIUM FITTINGS ETC.

287, Phatak Karor, Inside Ajmeri Gate, (Post Box No. 1526), DELHI-110006

Phones : Off. : 734496, 529958 **Resi. : 771785**
Grams : ESGEEA

संगठन का आधार - जन संपर्क व्यापकता

बद्री प्रसाद अग्रवाल
संयोजक रथ भ्रमण अग्रोहा
ज्योति योजना

संगठन को व्यापक बनाने के लिए प्रान्त, जिला, तहसील स्तर पर जन संपर्क अत्यंत आवश्यक है। अ० भा० स्तर का संगठन बनाने का उद्देश्य तो यही रहता है कि संपूर्ण सामाजिक जन शक्ति उस संगठन से जुड़े और संगठन का उद्देश्य सफल हो, किन्तु ऐसा होता नहीं। भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है। इसके प्रत्येक कोने में बसे अग्रवाल बंधुओं से संपर्क करना बहुत मुश्किल काम है। कोई दूसरा विवेकानन्द पैदा हो और वह पैदल या सवारी से (जो भी मिले) इसमें ही अपना लक्ष्य पूर्ण करने को कटिबद्ध हो तभी 10 वर्षों में यह कार्य संभव हो सकता है। लेकिन अग्रवाल समाज में अभी विवेकानन्द का स्वप्न देखना ही आकाश के तारे तोड़ लाना होगा। ऐसा नहीं कि यहां कर्मठ कार्यकर्ता नहीं हैं, ढूंढें तो मिल भी सकते हैं, किन्तु अभी जो कार्यकर्ताओं के नाम पर एक भीड़ एकत्र हो रही है, वहाँ नेता अधिक हैं कार्यकर्ता कम हैं, अतः इतने त्यागी-तपस्वी व्यक्तियों का मिल पाना हमें कठिन प्रतीत हो रहा है।

वर्ष 1974-75 में जबसे अ० भा० सम्मेलन की स्थापना हुई हम सब एक व्यापक एवं सुदृढ़ संगठन का सपना देख रहे हैं पर एक लम्बे अंतराल के बाद भी संगठन की व्यापकता अभी हमसे कोसों दूर है। पूरे भारतवर्ष में संगठन का संदेश पहुंचे प्रत्येक अग्रवाल परिवार का, अगोहा-अग्रसेन का, प्रचार व प्रसार हो तभी अ० भा० सम्मेलन तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट को अग्रोहा का तीर्थ धाम बनाने का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

यह कार्य समाचार पत्रों के माध्यम से भी सम्पन्न किया जा सकता है किन्तु वह एक अत्यधिक खर्चीली प्रणाली है, जो कोई भी अभी मौजूदा हालातों में वहन नहीं कर सकता। आज कल टी० वी० सर्वाधिक प्रचार का साधन माना जाता है किंतु अग्रवाल संगठन इस प्रकार के खर्च वहन करने में असमर्थ है।

संगठन को शीघ्र से शीघ्र समस्त अग्रवाल परिवारों तक पहुंचाने का एक मात्र माध्यम अग्रोहा-ज्योति ही नजर आती है। एक वर्ष में पूरे भारत का भ्रमण करके यह ज्योति सभी बन्धुओं तक अग्रोहा विकास ट्रस्ट तथा अग्रसेन का संदेश पहुंचाने में सार्थक सिद्ध होगी, इसमें दो मत नहीं है। यह कार्य भी

कठिन ही है। कौन इसको नियंत्रित करेगा, कैसे इसका प्रारम्भ होगा ये सभी बातें काफी गम्भीरता से सोचनी पड़ेंगी। किन्तु इसमें संदेह नहीं कि यह प्रचार वा प्रसार सर्वाधिक सरल तथा शीघ्र फलदायी माध्यम बन सकता है।

संगठन को शहर से गांव तक, कस्बो-खेड़े, एक-एक परिवार तक पहुचाने का एवं उसे एक सूत्र में जोड़ने का कार्य ही अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवालों की भावी उन्नति का द्वार है। इस दिशा में पन्द्रह वर्षों की हमारी प्रगति बहुत संतोषप्रद नहीं है। हमें जल्दी से जल्दी पूरे भारतवर्ष के अग्रवालों तक पहुंचाने का एक नजदीकी रास्ता खोजना ही होगा। जब तक अग्रवाल संगठन समाज के प्रत्येक घर तक अपने पाँव नहीं फैलाएगा तब तक संगठन का उद्देश्य फलित होने में संदेह है।

अभी पिछले दो महीनों में अग्रोहा ज्योति एवं रथ भ्रमण योजना का प्रचार प्रारभ हुआ है जिसके लिये अनेकों स्थानों से स्वीकृत के पत्र आये हैं। पर जब तक कि एक मार्ग से जाने पर रास्ते के हर स्थान के अग्रवाल बन्धु उसके लिए तैयार न हों तब तक उसका मार्ग निश्चित कर पाना बहुत कठिन है। पिछले दिनों हुई अन्तरंग समिति की बैठक में भी इस विषय पर विचार किया गया है और अन्त में यह निश्चय हुआ है कि इसकी अभी पूरी तैयारी की जाय और इस योजना को इस वर्ष की बजाय अगले वर्ष आयोजित किया जाय। इस योजना के विषय में लोगों के बहुत अच्छे-अच्छे सुझाव भी प्राप्त हुए हैं। जिन पर विचार कर उनका समावेश किया जा रहा है। इसके लिए सबसे बड़ी कमी कार्यकर्त्ताओं की होगी और दस बीस लोगों को इसमें पूरे समय के लिए जुटना होगा। योजना के लिए प्रत्येक प्रदेश का एक संयोजक नियुक्त किया जा रहा है और वह संयोजक प्रदेश के हर जिले में एक संयोजक नियुक्त करेगा और जिलों का संयोजक तहसील और हर नगर में इसका प्रचार प्रसार करेगा और जनमानस को हम योजना के लिए तैयार करेंगे और इन सभी संयोजकों की रिपोर्ट के अनुसार ही इस रथ को आगे बढ़ाना सम्भव होगा।

इस कार्य में सभी से सामर्थ्य भर (यथा शक्ति) अपेक्षा रखते हुए मैं समस्त अग्रवाल संगठनों से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने-अपने स्थान से अग्रोहा रथ के लिए आमंत्रण भेजें ताकि हमारा कार्य प्रारम्भ हो सके। 1990 के अग्रसेन जयंती पर्व पर यह रथ हरयाणा प्रांत में अग्रोहा धाम से प्रारम्भ होगा। प्रथम भ्रमण हरयाणा होता हुआ यह दिल्ली के स्थान-स्थान पर जाएगा। हम इस लेख द्वारा सभी संस्थाओं से कार्यकर्त्ताओं के नाम तथा आमंत्रण भेजने का अनुरोध करते हैं। सभी अग्रवाल बन्धु अपना समय तथा नाम देने की कृपा करें।

कितने सुन्दर दिन होंगे वे !

जब हम समाचार पत्रों में ढूँढ़ने पर भी यह नहीं पाएंगे कि दहेज की बेदी पर एक और महिला की बलि चढ़ाई गई, जब हम समाज में आपस में वार्तालाप करते हुंए किसी भी मित्र या साथी से यह नहीं सुनेंगे कि उनकी लाडली को उसकी ससुराल वाले केवल इसलिए तंग कर रहे हैं कि उसने उनको मुंह मांगा दहेज नहीं दिया, या जब हमें यह सुनने को नहीं मिलेगा कि समाज में कुछ लाडलियां 30 या 32 वर्ष की होने के बावजूद भी केवल इसलिए कुमारी बैठी है, कि उनके माता पिता के पास पर्याप्त दहेज नहीं है, जब हम किसी भी अनमोल विवाह के बारे में नही सुनेगें।

लेकिन क्या कभी आ पाएगें वे दिन ? शायद .... । उन सुन्दर दिनों के न आने देने के लिए हम और हमारी विचारधारा दोषी है। दोषी हैं वे माता पिता जिनका उद्देश्य केवल धन प्राप्ति होता है, योग्य लड़की की प्राप्ति नहीं। जब धन के लालच में लड़के वाले लड़के की अनदेखी करके लड़की को कम योग्य होते हुंए भी ले लेते हैं तब उन दोनों के मधुर सम्बन्ध रह नहीं सकते। जब एक योग्य लड़की को केवल इसलिए एक अयोग्य लड़के के साथ बांध दिया जाता है कि उसके माता पिता के पास देने के लिए पर्याप्त दहेज नहीं है। जब लड़के वालों की इच्छा हराम का धन प्राप्त करने की रहती है तथा वे लड़की को केवल इसलिए तंग करते हैं कि लड़के की शादी दुबारा होने पर उन्हें फिर दहेज मिलेगा।

यदि हम सचमुच में चाहते हैं कि दहेज की इस समस्या का समाधान हो तो हमें अपने ऊपर कुछ नियन्त्रण करना होगा तथा समाज के लिए कुछ त्याग करना होगा।

हमें चाहिए कि हम ऐसे परिवार का सामाजिक बहिष्कार कर दें. जिसके घर से बहू को तंग करने की सूचना मिलती है, चाहे वह हमारा मित्र, भाई या कोई नजदीकी रिश्तेदार ही क्यों न हो। सामाजिक बहिष्कार सबसे बड़ी सजा होती है , जब ऐसे परिवार के लड़के लड़कियों को समाज में कोई पूछेगा नही, तो निश्चय ही वे रास्ते पर आ जाएंगे तथा अन्य बहुंत से दहेज लोभियों को इससे शिक्षा मिलेगी। हम धन की बजाए लड़की के गुणों को महत्व दें। एक सुशील, सुशिक्षित और गृह कार्य में दक्ष कन्या अपने आप में ही एक बहुत बड़ा दहेज है। हमें चाहिए कि समाज के निर्धन व कमजोर लोगों के लिए विशेष कदम उठाएं। उनके बच्चों को पढ़ने का अवसर देने के लिए समाज की ओर से उन्हें सहायता मिलनी चाहिए। उनका रोजगार शुरु करवाने के लिए भी समाज का सहयोग होना चाहिए ताकि वे अपने आपको समाज का एक अंग समझें तथा उनके बच्चे अपनी योग्यता के आधार पर पति, पत्नी के रुप में उचित स्थान पा सकें।

लड़कियों के प्रति भी हमें अपनी विचार धारा को बदलना होगा। लड़की कोई पशु नही है, जिसे जिसको चाहे पकडा दें। जिस प्रकार लड़का लड़की के चुनाव में स्वतन्त्र है, उसी प्रकार लड़की को भी लड़के के बारे में अपने विचार व्यक्त करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। यदि पहले से ही दोनों एक दूसरे के स्वभाव, रुचि, व्यवहार आदि के बारे में जान लें तो शायद बाद में आने वाले संकट को रोका जा सकेगा।

यदि हम उपर्युक्त बताई बातों का पालन करें तो मेरे विचार से वे सुन्दर दिन अवश्य आएंगे जब हम लड़की का होना अभिशाप नहीं, अपना सौभाग्य समझेंगे तथा लड़की माता-पिता के लिए चिन्ता का कारण न बनकर एक योग्य एवं होनहार सन्तान के रुप उभरेगी। समाज में यह सुनने को नहीं मिलेगा कि उनके पास लड़की की शादी में देने के लिए पर्याप्त देहेज नहीं है।

—जय कुमार गुप्ता

With Best Compliments from :

ISI

BONTON CABLES

FIRE INSURANCE APPROVED

C.P.P.W.D. APPROVED

Sales Office :

BIR ELECTRIC CO.

Sadar Bazar, Delhi-110006

Phones : Off. : 774042 Res. : 513560

ANIL INDUSTRIES

Manufacturers of :

Quality Builder's Hardware

Specialists in :

Pegs, Tower Bolts & Towel Stands

469, GALI SHISH MAHAT, BAZAR, SITA RAM, DELHI-110006

Phone : Off. 730301 Res. : 516575

M & K ASSOCIATES

Manufacturers of :

Quality Builder's Hardware

469, GALI SHISH MAHAL, BAZAR SITA RAM, DELHI-110006

Phone : 730301

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With Best Compliments From :-

HARI KISHAN GUPTA

Delhi Cloth Wholesale Shop

Wholesale Dealers :

D.C.M. — S.B.M. — H.R.M.

LAL MARKET, ROHTAK (Haryana)

With Best Compliments

from :

❋

❋ ❋

❋

धर्म ट्रेडिंग कम्पनी

DHARAM TRADING COMPANY

4079, Naya Bazar,

DELHI-110006

Phones : Shop : 2529625, 2526233 Res. : 519941

अप्रिय शब्द बोलने से मौन रहना अच्छा है ।

With best compliments from :

S. R. JAIN

ADVANCE ENGINEERING WORKS

Manufacturers of :
Oil Immersed Stardelta Starters, Auto Transformer Starters,
Oil Circuit Breakers, Slipring Motor Starters

N-30, Gali No. 9, Industrial Area, Anand Parbat,
NEW DELHI-110005

Phones : Fact. : 5738287 Showroom : 775935 Resi. 511276

With Best Compliments from ;

FURMATS INDIA

405, PARTAP CHAMBER, GURDWARA ROAD, KAROL BAGH,
NEW DELHI-110005

TELEPHONES : Off. . 5725434 Resi. : 511656, 773735

Shanker Scrap Trading Co.

GODOWN NO. 6, CHARA MANDI, ZAKHIRA, DELHI.

UNITED TRADERS

405, Partap Chamber, Gurdwara Road, Karol Bagh,
NEW DELHI-110005

DEALS IN :

Furance Material viz. Ferro Alloys,
Iron Scrap-Refraction etc.

With Best Compliments
from :

RK

RAJ KUMAR

GOVT. CONTRACTOR B. & R.

C-6/175, KESHAV PURAM, DELHI-110035

Telephone . 7229638

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti.

With Best Compliments from :

Deepak Const. Co.

Govt. Contractors

A-1/149, PASCHIM VIHAR, NEW DELHI

श्री राम जन्म भूमि सम्बन्धी कुछ प्रामाणिक तथ्य

संकलन : नानूराम गुप्ता

❀ "यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे स्थान पर कोई मस्जिद बनाई गई जिसे हिन्दू अत्यधिक पवित्र मानते हैं, किन्तु क्योंकि यह घटना 356 वर्ष पहले घटी थी इसलिए बहुत देर हो जाने के कारण इस शिकायत को दूर नहीं किया जा सकता।"

(जिला कचहरी फैजाबाद में 1885 की दीवानी अपील सं० 27 पर अंग्रेज जज कर्नल एफ० ई० ए० शेमियर द्वारा फैसला ता० 18 मार्च 1886)

❀ "सर्वाधिक पुरातत्वीय प्रमाण के रुप में काले स्तम्भों के टुकड़े हैं जो उस पुराने मन्दिर के अवशेष हैं जो राम के धरती पर अवतार लेने के स्थान पर अवस्थित था। यह मन्दिर 1528 में पहले मुगल शहजादे बाबर द्वारा नष्ट किया गया और उसके स्थान पर मस्जिद का निर्माण किया गया जो आज भी अस्तित्व में हैं ..... ।"

❀ बाबर के समय अयोध्या विशेष रुप से जन्म स्थल के मन्दिर ने स्पष्टत. इतनी प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी कि उसने नए बादशाह की ईर्ष्याग्नि बढ़ा दी। ऐसा संभवतः स्थानीय मुसलमानों द्वारा भड़काए जाने पर हुआ जिनको इस हिन्दू तीर्थ यात्रा के केन्द्र का फलना फूलना शरीर में कांटे की तरह चुभ रहा था। स्थानीय जन-चर्चा के अनुसार अनिवार्यतः वह पीर फज़ल अब्बास मूसा आशिकान हो रहा होगा जिसने बाबर को बुत परस्ती के इस कुख्यात केन्द्र को नष्ट करने के लिए उकसाया था।"

(डच विद्वान हंस बाकर द्वारा लिखित व नीदर लैंड के ग्रोजिन जेन विश्व विद्यालय द्वारा 1986 में प्रकाशित पुस्तक के अयोध्या सम्बन्धी लेख से उद्धृत)।

❀ "कम से कम 1936 के बाद से मुसलमानों ने न तो इस स्थान को किसी मस्जिद के रुप में प्रयोग किया है और न ही यहां पर नमाज अदा की है, जबकि हिन्दू इस विवादास्पद स्थान पर अपनी पूजा-अर्चना आदि करते रहे हैं।"

(दिनांक 3 मार्च 1951 को गोपाल सिंह विशारद बनाम जहूर अहमद तथा अन्य के मामले में सिविल जज फेंजाबाद द्वारा की गई टिप्पणी)।

❀ "चूंकि गत 35 वर्षों से हिन्दुओं को निर्बाध रुप से पूजा करने का अधिकार प्राप्त है अतः 1951 में कानून और व्यवस्था के आधार पर इस स्थान पर दोनों दरवाजों पर लगाए गए ताले हटा दिए जांय।"

(पहली फरवरी 1986 को 1986 की सिविल अपील सं० 6 पर फैजाबाद के जिला न्यायाधीश द्वारा दिया गया निर्देश)।

❀ स्थानीय स्तर पर इस बात की पुष्टि होती है कि मुसलमानों की विजय के समय यहाँ अजुध्या में तीन महत्वपूर्ण हिन्दू मन्दिर थे। पर जिनमें कम श्रद्धालु आते थे। क्योंकि अजुध्या तब वियाबान से कुछ ही कम था। (बहुत कम बसा हुआ-सं०) ये मन्दिर थे—'जन्मस्थान', स्वर्गद्वार मंदिर जिसे 'रामदरबार' भी कहा जाता है और त्रेता के ठाकुर। विजितों पर अपना मजहब थोपने के सर्वज्ञात मुस्लिम सिद्धान्त के अनुसार इनमें से पहले पर बाबर ने 1528 में एक मस्जिद का निर्माण किया जो आज भी उसी के नाम से जानी जाती है। दूसरे पर औरंगजेब ने 1658-1707 में वही किया और तीसरे पर भी उसी ने या उसके पहले के बादशाह ने मस्जिद बनवाई।

जन्मस्थान वह स्थान है जहाँ रामचन्द्र का जन्म हुआ था। स्वर्गद्वार उस 'द्वार' को कहते हैं जिस से होकर वे स्वर्ग की ओर गये थे। संभवतः उस जगह उनकी अत्येष्टि हुई होगी। 'त्रेता के ठाकुर' उस स्थान के रुप में प्रसिद्ध था जहाँ राम ने एक महान बलिदान (यज्ञ-सं०) किया था और जिसे उन्होंने अपनी और सीता की मूर्तियाँ बनाकर सम्पन्न किया था।

अगर उस समय अयोध्या बीहड़ नहीं रहा होगा तो जन्मस्थान में कम से कम एक श्रेष्ठ मन्दिर होना ही चाहिए था, क्योंकि उनके बहुत से स्तम्भ आज भी अच्छी स्थिति में हैं, जिनका मुसलमानों ने बाबरी मस्जिद के निर्माण में प्रयोग किया। ये सलेटी या काले मजबूत सघन पत्थर के बने हैं, जिन्हें स्थानीय नागरिक कसौटी पत्थर कहते हैं। मेरे विचार से ये उन बौद्ध स्तम्भों के समान हैं जिन्हें मैंने बनारस और अन्य स्थानों पर देखा है। ये सात से आठ फीट लम्बे, आधार, मध्य और शीर्ष पर चौरस और मध्य भाग में गोल या अष्ट भुजाकार है।

(राष्ट्रीय अभिलेखागार के पुस्तकालय में 1870 के एक दस्तावेज की प्रति, जो ब्रिटिश सरकार के तीन वरिष्ठ बन्दोबस्त पदाधिकारियों, कारनेगी, वुडवर्न और नोबल द्वारा तैयार किया गया था, के 'फैजाबाद जिले के ऐतिहासिक विवरण' से उद्धृत)।

With Best Compliments From :-

FINE QUALITY

COTTON AND POLYESTER BLENDS

at

AMAZING PRICES

GREAT FABRICS, GREAT PRICES

Suitings, Shirtings and Dress Materials

in

Cotton and Polyester Blends

available at all NTC outlets and

leading showrooms

NATIONAL TEXTILE

8th Floor, Surya Kiran Building,
19, Kasturba Gandhi Marg,
NEW DELHI-110001

ON THE OCCASION OF MAHARAJA AGRASAIN JAYANTI

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

GUPTA CONSTRUCTION CO.

A-29, Asha Park, NEW DELHI-110018

With Best Compliments from:

M. K. CONSTRUCTION CO.

Government Contractor

AC 4/29B, SHALIMAR BAGH, NEW DELHI-110052

संगठन का स्नेहिल दीप

जलाते रहो दीप स्नेहिल धरा पर,
कभी तो धरा का अंधेरा मिटेगा।
चुनौती भरा है यह जीवन हमारा,
जले दीप ज्योतित सवेरा मिलेगा।।

रहेगा धरा पर दीया एक जब तक,
हरण तम का होगा उजाला मिलेगा।
बहाते चलो नाव स्नेहिल निरन्तर,
उसी से मनुज को किनारा मिलेगा।।

सुखी हों, खुशी हों सभी बन्धु बान्धव,
इसी से सरसता का निर्झर बहेगा।
करें कामना पूर्ण सबकी प्रभुवर,
उन्हीं की कृपा से सहारा मिलेगा।।

रचयिता :
—विष्णु चन्द्र गुप्त
1910/145, त्रिनगर, दिल्ली-35

महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर हार्दिक शुभ कामनाएं।

मन्दिर समिति (पंजी०) विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-7

के तत्वावधान में

जन सेवा का एक और कार्य

धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय

का

शुभारम्भ

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक

सुयोग्य युवा चिकित्सक — डा० मुरारी लाल गुप्ता द्वारा

हर प्रकार के नए व पुराने रोगों की अनुभूत चिकित्सा

आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

ओम प्रकाश गोयल

पदम नगर, दिल्ली-110007

दूरभाष : 736368

संस्थान :—

इलेक्ट्रेडर्स

इलैक्ट्रिक मोटर, पम्प सैट, स्विच गियर, स्टार्टर व सायरन के थोक व परचून विक्रेता

3886/7, जी० बी० रोड़, (स्कूल के पीछे), दिल्ली-110006

दूरभाष : 511130

महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

बनारसी, बंगलोरी, लहंगा-चुन्नी, फैन्सी-इम्ब्राइड्री एवं हर प्रकार की आधुनिक प्रिन्टस साड़ियों के लिए आपकी अपनी दुकान, अवश्य पधारें।

अनुपम साड़ी सैन्टर (रजि०)

आधुनिक साड़ियों के थोक विक्रेता

953, पहली मंजिल भोजपुरा मालीवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006

दूरभाष : 261367 P.P.

पूजा साड़ी सैन्टर

फैन्सी साड़ियों के विक्रेता

2344, तोता राम बाजार, त्रिनगर, दिल्ली-110035

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti.

With Best Compliments from :

Gupta Tent & Light (Regd.)

FOR FIRST CLASS :

Water Proof Pandal, Plywood Decoration, Chunat Designing

Specialists in : OUT DOOR CATERING

M-96, HARI NAGAR, CLOCK TOWER, NEW DELHI-110064

Phone : 539978

With Best Compliments from :

Nari Shan International

EXPORTERS AND IMPORTERS

Readymade Garments, Handicrafts, Incence & Jewellery

B-225, Hari Nagar, Clock Tower, New Delhi-110064

Phone : Office : 5412622

R. K. Gupta
Prop.

D. P. Gupta
Managing Director

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With Best Compliments From :

MANOJ GUPTA

115, VIVEKANAND PURI, DELHI-110007

Phone : 771692

PRINCE (R)

L. P. GAS STOVE

IS : 4246

ISI

A Quality Product from the House of :

VIJAYVERGIYA

SHIV SHAKTI ENTERPRISES

E-2/44, Shakti House Shastri Nagar,
DELHI-110052

Phone : 737594

On the occasion of Maharaja Agrasain Jayanti

With Best Compliments from :

BISHAN DAYAL GOEL (Guptajee Tar
PRAVEEN GOEL, NAVEEN GOEL

Mahalaxmi Sales Corp

Manufacturers
Representative
&
Wholesale Dealers
IN :

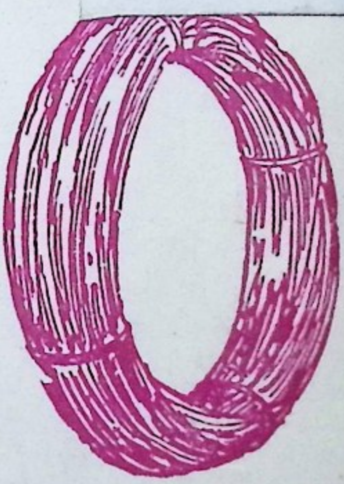

Aluminium Wires, Electric Wires & Cables, Auto Halogen Bulbs
'AMA' Brand Made in West Germany used in Maruti, Tata,
NE 118, Contessa, Matador etc,

Res. -
Angoori Sadan
231, Vivekanand Puri,
Sarai Rohilla, Delhi-110007
Phone : 525483, 522718

Office :
1502, Ram Gali,
Bhagirath Palace,
Chandni Chowk, Delhi-110006
Phone : 233479

Associate Concern :

Shri Mahalaxmi Copper & Wire Industries
VILLAGE & POST OFFICE NANGLOI JAT, DELHI-110041
Phone : 5472257

Printed at : NEEL KAMAL PRINTING PRESS, 173/1. PADAM NAGAR, DELHI-7 ● Ph. 739863